संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 172
पृष्ठ 8
शुक्रवार
13 मार्च 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- इस बार शुभ दुर्लभ संयोग में...

विचार- न्यायपालिका में भ्रष्टाचार की चर्चा...

खेल- 2012 में बीसीसीआई ने ऐसा क्या...

कृषि-खाद्य क्षेत्र में महिलाओं को नीति-निर्माण व निर्णय प्रक्रिया में अधिक भूमिका मिले : राष्ट्रपति

नयी दिल्ली,एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बृहस्पतिवार को कहा कि कृषि एवं कृषि–खाद्य क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं को नीति निर्माण, निर्णय–प्रक्रिया और नेतृत्व पदों पर अधिक भूमिका मिलनी चाहिए। उन्होंने इस क्षेत्र की पूरी मूल्य श्रृंखला में लैंगिक असमानता को खत्म करने के लिए सामूहिक प्रयास का आह्वान किया। राष्ट्रपति ने तीन दिवसीय महिलाएं एवं कृषि–खाद्य प्रणाली वैश्विक सम्मेलन को संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में महिलाओं की सफलता की कहानियों को व्यापक रूप से प्रकाशित किया जाना चाहिए, ताकि समाज उनके योगदान के बारे में अधिक जान पाए। मुर्मू ने भारत द्वारा अपनाए गए महिला–नेतृत्व वाले विकास के दृष्टिकोण का उल्लेख करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र में महिलाओं की हर स्तर पर भागीदारी बढ़ाने से समावेशी कृषि वृद्धि को बढ़ावा मिलेगा। राष्ट्रपति ने महिला किसानों को भूमि स्वामित्व, तकनीकी ज्ञान और संस्थागत वित्त तक पहुंच के लिए लक्षित सहायता देने की आवश्यकता पर जोर दिया। तकनीक की भूमिका पर उन्होंने कृत्रिम मेधा (एआई) आधारित पहल सरलाबेन का उल्लेख किया, जो सरकार के पशुधन देखभाल दृष्टिकोण्से प्रेरित है और महिला किसानों के लिए नई संभावनाएं खोल रही है। सरकार के तमिलनाडु, महाराष्ट्र, ओडिशा और बिहार की महिला किसानों को पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किए जाने का जिक्र करते हुए मुर्मू ने कहा कि अगली पीढ़ी को कृषि क्षेत्र में सार्थक योगदान देने के लिए इन अग्रणी महिलाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2026 को श्महिला किसान अंतरराष्ट्रीय वर्ष घोषित किए जाने का स्वागत करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि यह कृषि–खाद्य मूल्य श्रृंखला में महिलाओं की नेतृत्व भूमिका बढ़ाने और लैंगिक अंतर को कम करने का वैश्विक आह्वान है। उन्होंने बताया कि पिछले दशक में केंद्र सरकार की कई योजनाओं ने कृषि क्षेत्र में महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा दिया है। प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत 57 करोड़ बैंक खाते खोले गए हैं, जिनमें 56 प्रतिशत महिलाओं के हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की 68 प्रतिशत लाभार्थी महिलाएं हैं। दीनदयाल अंत्योदय योजना दृराष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत 10 करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवार और 90 लाख स्वयं सहायता समूह जोड़े गए हैं। इस मिशन के तहत 4.6 करोड़ से अधिक महिला किसानों को बेहतर कृषि पद्धतियां अपनाने में सहायता मिली है। उन्होंने नमो ड्रोन दीदी योजना का भी उल्लेख किया जिसके तहत महिला स्वयं सहायता समूहों को ड्रोन उपलब्ध कराए जा रहे हैं ताकि सटीक कृषि तकनीकों का उपयोग बढ़ सके। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ने छह करोड़ लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा है, जिनमें से तीन करोड़ से अधिक महिलाएं पहले ही सालाना एक लाख रुपये से अधिक आय प्राप्त कर रही हैं। वहीं 2025–26 के केंद्रीय बजट में हर जिले में स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों की बिक्री के लिए शी मार्ट (स्वयं सहायता उद्यमी बाजार) स्थापित करने का प्रस्ताव रखा गया है जिससे महिलाओं को बेहतर बाजार उपलब्ध होगा। अपने संबोधन के अंत में राष्ट्रपति ने लोगों, पृथ्वी, समृद्धि, शांति और साझेदारी के वैश्विक ढांचे का उल्लेख करते हुए सभी पक्षों से विचार एवं कार्य दोनों में लैंगिक समानता को विशेष प्राथमिकता देने का आग्रह किया। मुर्मू ने कहा, यदि कृषि सहित हर क्षेत्र में प्रभावी लैंगिक समावेशन सुनिश्चित किया जाए तो हम न केवल सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करेंगे, बल्कि पृथ्वी को अधिक संवेदनशील और सामंजस्यपूर्ण भी बना सकेंगे।श्

कार्यक्रम में शिवराज सिंह चौहान, एम एल जाट, आर एस परोदा और त्रिलोचन महापात्र सहित कई विशेषज्ञ और अधिकारी भी उपस्थित रहे। यह तीन दिवसीय सम्मेलन महिलाओं की सफलता की कहानियों को साझा करने, कृषि नीतियों में लैंगिक दृष्टिकोण को शामिल करने, तथा उद्यमिता, वित्तीय मॉडल और बाजार संपर्क जैसे विषयों पर चर्चा पर केंद्रित है।

हरदीप पुरी बोले-

इतिहास का सबसे बड़ा पल

पश्चिम एशिया संकट से ऊर्जा बाजार में हड़कंप

नई दिल्ली,एजेंसी। लोकसभा में केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने पश्चिम एशिया संकट के बाद देश में गैस की किल्लत के मुद्दे पर बयान दिया। उन्होंने कहा कि दुनिया के ऊर्जा इतिहास में शायद ही कभी ऐसा समय आया हो जैसा अभी पश्चिम एशिया के संकट के कारण देखने को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि यह स्थिति वैश्विक तेल और गैस आपूर्ति के लिए बेहद गंभीर मानी जा रही है। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप पुरी ने अपने बयान में कहा, होर्मुज से 20 प्रतिशत आवाजाही प्रभावित हुई है, 40 प्रतिशत कच्चा तेल दूसरे देश से आ रहा हैं। उन्होंने इस दौरान कहा कि हमारे पास पर्याप्त कच्चा तेल है। केंद्रीय मंत्री ने आगे बताया कि भारत की क्रूड सप्लाई पूरी तरह से सुरक्षित है और भारत में पेट्रोल–डीजल की किसी भी तरह की कोई दिक्कत नहीं, देश में अभी पर्याप्त गैस है। गैस की किल्लत को लेकर अफवाहों के बीच केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सीएनजी की सप्लाई 100 प्रतिशत जारी है, भारत में एलएनजी के कार्गो रोज आ रहे हैं। गैस सिलेंडर को लेकर किसी भी तरह से पैनिक होने की जरूरत नहीं है, पैनिक होने की वजह से डिमांड बढ़ी है। इस दौरान केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने बताया कि देश में एलपीजी का उत्पादन 28 फीसदी बढ़ा है और देश लंबे समय तक इस संकट से निकटने को लेकर पूरी तरह से तैयार है। पेट्रोलियम मंत्री ने आगे कहा कि भारत अभी भी कनाडा, नार्वे और रूस से तेल ले रहा है और हमने गैस की कालाबाजारी को रोकने के निर्देश जारी किए है। मंत्री ने बताया कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के कारण महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग होर्मुज जलडमरूमध्य लगभग बंद हो गया है। उनके अनुसार, दर्ज इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है कि यह समुद्री रास्ता व्यावसायिक जहाजों के लिए प्रभावी रूप से बंद जैसा हो गया है। यह वही मार्ग है जिससे दुनिया के बड़े हिस्से तक कच्चा तेल पहुंचता है। हरदीप पुरी ने संसद में कहा कि भारत इस संघर्ष का कारण नहीं है, लेकिन इसके असर से बच पाना भी संभव नहीं है। ऐसे हालात में भारत सरकार को ऊर्जा आपूर्ति, तेल की कीमतोंऔर देश की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए सावधानी से आगे बढ़ना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार लगातार स्थिति पर नजर रख रही है और देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए हर संभव कदम उठाए जा रहे हैं ताकि आम लोगों पर इसका असर कम से कम पड़े।

सीएम ममता का नए राज्यपाल को संदेश

बंगाल उनसे प्यार करता है जो बंगाल से प्यार करते हैं

कोलकाता,एजेंसी। इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) के पूर्व शीर्ष अधिकारी और तमिलनाडु के पूर्व राज्यपाल आर.एन. रवि ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल के 22वें राज्यपाल के तौर पर शपथ ली। शपथ ग्रहण समारोह के बाद बातचीत के दौरान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का उनसे पहला संदेश था कि बंगाल उनसे प्यार करता है जो बंगाल से प्यार करते हैं। शपथ समारोह खत्म होने के बाद, मुख्यमंत्री ने नए राज्यपाल के गले में लबादे का एक टुकड़ा डालकर उनका स्वागत किया। उस बातचीत के दौरान, मुख्यमंत्री ने रवि को यह छोटा सा मैसेज दिया। मुख्यमंत्री ने राज्यपाल से कहा, ष्बंगाल और बंगाली सभी भाषाई बैकग्राउंड के लोगों का सम्मान करते हैं। बंगाल में सभी लोग शांति के साथ रहते हैं। लेकिन खास बात यह है कि बंगाल उनसे प्यार करता है जो बंगाल से प्यार करते हैं। यह बंगाली लोगों की खासियत है। राज्यपाल को मुख्यमंत्री को जवाब देते हुए सुना गया, यह सच है कि पश्चिम बंगाल भारत की इंटेलेक्चुअल और कल्चरल कैपिटल है। राजनीतिक जानकारों को लगता है कि इस बयान, बंगाल उनसे प्यार करता है जो बंगाल से प्यार करते हैं, के जरिए मुख्यमंत्री ने नए गवर्नर को एक छोटा सा मैसेज दिया है। शहर के एक राजनीतिक जानकार ने कहा, वह मैसेज यह है कि स्टेट सेक्रेटेरिएट और गवर्नर हाउस के बीच अच्छे रिश्ते तभी बन पाएंगे जब गवर्नर हाउस की तरफ से ऐसा कोई काम न हो जो राज्य या राज्य सरकार के हित के खिलाफ हो।

अविश्वास प्रस्ताव पर ओम बिरला

लोकतंत्र में मजबूत विपक्ष जरूरी, नेता प्रतिपक्ष को कभी नहीं रोका

नई दिल्ली,एजेंसी। लोकसभा में स्पीकर ओम बिरला अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के बाद आज पहली बार आसन पर आए। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में मजबूत विपक्ष का होना अत्यंत आवश्यक है और नेता प्रतिपक्ष को कभी नहीं रोका गया। उन्होंने स्पष्ट किया कि संसद के नियम सर्वोपरि हैं और कोई भी व्यक्ति नियम से ऊपर नहीं है, चाहे वह प्रधानमंत्री ही क्यों न हों। ओम बिरला ने बताया कि सदन में पिछले दो दिनों में 12 घंटे से अधिक बहस हुई, ताकि सभी सदस्यों के विचार और चिंताएं सामने आ सकें। उन्होंने कहा यह सदन 140 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। यहां हर सांसद अपनी जनता की समस्याओं और अपेक्षाओं के साथ आता है। मैंने हमेशा कोशिश की कि हर सांसद नियमों के तहत अपनी बात रखे। मैं हर उस सांसद को बोलने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करता रहा जो कम बोलते थे, क्योंकि बोलने से लोकतंत्र का संकल्प मजबूत होता है।

उन्होंने सदन को विचारों का जीवंत मंच बताते हुए कहा कि पिछले दो दिन में सभी सदस्यों की बातों को गंभीरता से सुना गया। हर सदस्य का आभारी हूं, चाहे वे आलोचक ही क्यों न रहे हों। यही विशेषता है कि यहां हर आवाज सुनी जाती है। यह आसन किसी व्यक्ति का नहीं है, यह लोकतंत्र की महान भावना का प्रतिनिधि है। ओम बिरला ने विपक्ष की शिकायतों का भी जवाब दिया। कुछ सदस्यों का कहना था कि नेता प्रतिपक्ष को बोलने से रोका जाता है। इस पर उन्होंने कहा मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि कोई भी हो, उसे सदन में नियमों के तहत बोलने का अधिकार है। कुछ लोगों का मानना था कि सदन के नेता हर नियम से ऊपर हैं। मैं साफ कर दूं कि ऐसा नहीं है। ये नियम मुझे विरासत में मिले हैं और इन्हें पालन करना अनिवार्य है। चाहे प्रधानमंत्री ही क्यों न हों, नियम 372 के तहत उन्हें पहले अध्यक्ष से अनुमति लेना अनिवार्य है। जब कोई सदस्य इस सदन की मर्यादा के खिलाफ जाते हैं तो मुझे कठोर निर्णय लेने की व्यवस्था देनी पड़ती है। नियमों के तहत किसी भी सदस्य को सदन में बोलने की आजादी तो है, लेकिन नियमों की सीमा में रहकर। उन्होंने कहा कि चर्चा के दौरान कुछ लोगों ने माइक बंद करने का आरोप लगाया। चेयर के पास माइक बंद करने का बटन नहीं होता। विपक्ष में कई लोग इस चेयर पर बैठते हैं, उन्हें इसके बारे में पता है। ओम बिरला ने कहा कि महिला सदस्यों को लेकर भी आरोप लगाया गया कि उन्हें मौका कम दिया जाता है। लेकिन मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे कार्यकाल में सभी महिला सदस्यों ने अपने विचार रखे हैं। बजट पर चर्चा के दौरान कुछ महिला सदस्यों ने ट्रेजरी बेंच की तरफ जाकर नारेबाजी करने की कोशिश की। यह अप्रत्याशित घटना थी, इसलिए मैंने सदन में सत्ता पक्ष के नेता को सदन में न आने का आग्रह किया। मेरी कोशिश रहती है कि भले ही देर रात तक बैठना हो, मैं सबके बोलने के बाद ही सदन से जाता हूं। मुझे खुशी है कि जो भी सदन में बोलना चाहता था, उसे एक साल के अंदर ही मैंने बोलने का मौका दिया। निलंबन का विषय भी कुछ सदस्यों ने उठाया है। मेरा दल से ऊपर उठकर सभी सदस्यों से व्यक्तिगत संबंध आज भी है। लेकिन सदन की व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी भी मेरी है। हमें विचार करना होगा कि इस सदन को निलंबन जैसे कठोर निर्णय क्यों लेने पड़े। मैं अक्सर आग्रह करता हूं कि सदन की गरिमा बनी रहे। लेकिन जब सदन के सदस्य नहीं मानते, तो सदन स्थगित करना पड़ता है।

एलपीजी संकट पर राहुल गांधी का बयान

संसद से नरेंदर गायब, देश से सिलेंडर गायब

नई दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने ऊर्जा सुरक्षा मामले में केंद्र सरकार को घेरा है। उन्होंने संकट से निपटने के लिए अग्रिम तैयारी किए जाने का आह्वान करते हुए कहा, अगर ऐसा नहीं किया गया, तो भविष्य में करोड़ों लोगों को नुकसान उठाना पड़ेगा। राहुल का ये बयान एलपीजी की कमी को लेकर आई हालिया मीडिया रिपोर्ट्स के बीच आया है। उन्होंने संसद परिसर में पत्रकारों से बात करने के अलावा सोशल मीडिया पर तस्वीरें साझा करते हुए भी सरकार को घेरा।

राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री की संसद में अनुपस्थिति को लेकर भी सवाल खड़े किए। उन्होंने अपने फेसबुक पर संसद परिसर में विरोध–प्रदर्शन की तस्वीरें साझा करते हुए लिखा, 'संसद से नरेंदर गायब, देश से सिलेंडर गायब!'

इस मामले में फेसबुक पोस्ट के अलावा राहुल ने संसद भवन परिसर में पत्रकारों से कहा, पीएम मोदी भारत के प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करने में असमर्थ हैं क्योंकि वह फंसे हुए हैं। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भारत के लोग सुरक्षित रहें और देश की ऊर्जा सुरक्षा का प्रबंधन हम स्वयं करें। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने जोर देकर कहा, गैस और ईंधन एक बड़ी समस्या बनने वाले हैं क्योंकि हमारी ऊर्जा सुरक्षा से समझौता हुआ है। उन्होंने कहा कि यह ईरान के होर्मुज क्षेत्र से तेल के जहाजों को आने की अनुमति देने या न देने से भी बड़ा मुद्दा है।

वायु सेना का ताकत का प्रदर्शन

नई दिल्ली,एजेंसी। आज भारत की वायु सेना का सीमावर्ती क्षेत्र में मजबूत प्रदर्शन करने के लिए देखने को मिला। भारतीय वायु सेना के प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने आज मिग–29 यूपीजी मल्टी–रोल लड़ाकू विमान को अकेले उड़ाया। एपी सिंह ने एक प्रमुख सीमावर्ती बेस से उड़ान भरी। विमान के लैंड करने का वीडियो भी सामने आया है। अपनी यात्रा के बाद, एयर चीफ ने बेस पर भारतीय वायु सेना के पूर्व सैनिकों से भी बातचीत की।

इस दौरे में भारतीय वायु सेना की ऑपरेशनल तैयारी, लड़ाकू क्षमताओं और फॉरवर्ड बेस पर मिशन की तैयारी पर जोर दिया गया। मिकोयान मिग–29 सोवियत यूनियन का बनाया हुआ एक द्वी–इंजन लड़ाकू विमान है।

यूपीएससी में नियुक्तियों पर अदालत से राहत

केवल इनकम के आधार पर ओबीसी क्रीमी लेयर का दर्जा नहीं

नई दिल्ली,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के क्रीमी लेयर से जुड़े मुकदमे में अहम टिप्पणी की। दो जजों की खंडपीठ ने आज अपने फैसले में कहा कि आरक्षण के इस मामले में अभ्यर्थी के क्रीमी लेयर का निर्धारण केवल माता–पिता या अभिभावकों की सैलरी के आधार पर नहीं किया जा सका। जस्टिस पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति आर महादेवन की पीठ ने अपने फैसले में सरकार की अपील को खारिज कर दिया। अदालत ने कहा कि क्रीमी लेयर दर्जा का निर्धारण करते समय माता–पिता या अभिभावकों के पदों और स्थिति को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। बेंच ने केंद्र सरकार की उन अपीलों को खारिज कर दिया, जो हाई कोर्ट के फैसलों के खिलाफ थीं। कोर्ट ने उन यूपीएससी उम्मीदवारों को बड़ी राहत दी है, जिन्हें सिविल सेवा परीक्षा पास करने के बावजूद नौकरी नहीं दी गई थी। सरकार ने उनके माता–पिता की सैलरी को आधार मानकर उन्हें गलत तरीके से क्रीमी लेयर की श्रेणी में डाल दिया था। अदालत ने साफ किया कि अधिकारियों ने उम्मीदवारों को आरक्षण से बाहर करने के लिए गलत पैमाना अपनाया। जस्टिस महादेवन ने फैसले में लिखा कि कोई उम्मीदवार क्रीमी लेयर में आता है या नहीं, इसका फैसला केवल आय के आधार पर नहीं हो सकता। यह पूरा विवाद उन उम्मीदवारों से जुड़ा था जिनके माता–पिता सार्वजनिक उपक्रमों (पीएसयू), बैंकों या इसी तरह के संस्थानों में काम करते थे। सरकार ने 2004 के एक स्पष्टीकरण पत्र का सहारा लेकर उनकी सैलरी को आय में जोड़ दिया था। इस वजह से वे आरक्षण के लाभ से वंचित हो गए थे। सुप्रीम कोर्ट ने 1993 के सरकारी आदेश का हवाला दिया।

यह आदेश इंदिरा साहनी मामले के बाद बना था। इसमें स्पष्ट है कि क्रीमी लेयर तय करने के लिए माता–पिता का पद (जैसे ग्रुप ए या ग्रुप बी अधिकारी) मुख्य आधार है। इस नियम के तहत सैलरी और खेती से होने वाली कमाई को आयध्संपत्ति टेस्ट में शामिल नहीं किया जाता।

मात्र पीड़ित के एससी-एसटी होने से एफआईआर का निर्देश अनिवार्य नहीं

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि केवल इस आधार पर कि पीड़ित अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति वर्ग से है, विशेष अदालत या मजिस्ट्रेट के लिए एफआईआर दर्ज कराने का निर्देश देना अनिवार्य नहीं है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि केवल इस आधार पर कि पीड़ित अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति वर्ग से है, विशेष अदालत या मजिस्ट्रेट के लिए एफआईआर दर्ज कराने का निर्देश देना अनिवार्य नहीं है। यह टिप्पणी न्यायमूर्ति अनिल कुमार–दशम की एकल पीठ ने आजमगढ़ निवासी कुसुम कनौजिया की आपराधिक अपील खारिज करते हुए की। याची ने पवन चौबे और चार अन्य के खिलाफ बरदह थाने में दर्ज मामले में विशेष न्यायाधीश (एससी–एसटी अधिनियम) की ओर से 19 जनवरी 2026 को पारित आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें उसका आवेदन खारिज कर दिया गया था।

मामले में राज्य सरकार की ओर से कहा गया कि एससी–एसटी एक्ट में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है, जो विशेष अदालत को आवेदन पर जांच करने से रोकता हो। अदालत ने दो बिंदुओं पर विचार किया। पहला, क्या विशेष अदालत को एससी–एसटी एक्ट के तहत आवेदन पर जांच का अधिकार है। दूसरा, क्या ट्रायल कोर्ट का निर्णय सही है। कोर्ट ने कहा कि ऐसे मामलों में अदालत आरोपों का परीक्षण कर यह तय कर सकती है कि पुलिस से विवेचना कराई जाए या शिकायत के आधार पर कंप्लेंट केस चलाकर आगे की कार्यवाही की जाए।

उम्रकैद के दोषी के मामले में पुलिस कमिश्नर हलफनामा दाखिल करें नहीं तो हों पेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उम्रकैद की सजा काट रहे दोषी की अपील व जमानत अर्जी पर सुनवाई की। प्रयागराज के पुलिस कमिश्नर को जवाबी हलफनामा दाखिल करने या 19 मार्च को न्यायालय में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने का निर्देश दिया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उम्रकैद की सजा काट रहे दोषी की अपील व जमानत अर्जी पर सुनवाई की। प्रयागराज के पुलिस कमिश्नर को जवाबी हलफनामा दाखिल करने या 19 मार्च को न्यायालय में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा और न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार मिश्र की खंडपीठ ने सूरज उर्फ सूर्य भूषण मिश्र की जमानत अर्जी पर सुनवाई करते हुए दिया। कोर्ट ने इससे पहले अधीनस्थ अदालत की पत्रावली तलब करते हुए राज्य सरकार से जवाब मांगा था, लेकिन न तो पत्रावली प्रस्तुत की गई और न ही जवाबी हलफनामा दाखिल किया गया। याची के अधिवक्ता ने दलील दी कि 26 जुलाई 2018 को फूलपुर थाने में सूरज मिश्रा उर्फ सूर्य भूषण मिश्रा, दो अन्य के खिलाफ पॉक्सो एक्ट और एससी–एसटी एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज की गई थी। मामले में विशेष अदालत ने 27 नवंबर 2025 को आरोपी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। निर्णय के खिलाफ याची ने हाईकोर्ट में आपराधिक अपील दाखिल की ।

हाईकोर्ट का फैसला- पति की आय को आधार मान पत्नी और बेटे के गुजारा-भत्ता में की वृद्धि

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने परिवार न्यायालय की ओर निर्धारित अंतरिम भरण–पोषण की राशि कम मानते हुए बढ़ा दी है। यह आदेश न्यायमूर्ति मदन पाल सिंह की एकल पीठ ने प्रीति तोमर चौधरी व उनके नाबालिग बेटे की ओर से दायर आपराधिक पुनरीक्षण याचिका पर दिया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने परिवार न्यायालय की ओर निर्धारित अंतरिम भरण–पोषण की राशि कम मानते हुए बढ़ा दी है। यह आदेश न्यायमूर्ति मदन पाल सिंह की एकल पीठ ने प्रीति तोमर चौधरी व उनके नाबालिग बेटे की ओर से दायर आपराधिक पुनरीक्षण याचिका पर दिया है। मेरठ के परिवार न्यायालय ने नीरज कुमार चौधरी को पत्नी को 7,000 रुपये और बेटे को 5,000 रुपये प्रति माह देने का आदेश दिया था। इस आदेश को पत्नी ने हाईकोर्ट में चुनौती दी। तर्क था कि पति की वास्तविक आय 85,000 से 90,000 रुपये प्रति माह है। हाईकोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के रजनीश बनाम नेहा और अन्य मामलों के नजीर का हवाला देते हुए कहा कि भरण–पोषण भत्ता पति की शुद्ध आय के 25 प्रतिशत तक हो सकता है। अदालत ने अब 21,000 रुपये प्रति माह देने का निर्देश दिया है, जिसमें से 15,000 रुपये पत्नी को और 6,000 रुपये नाबालिग बेटे को मिलेंगे।

पत्नी के पास अलग रहने के पर्याप्त कारण हैं तो गुजारा-भत्ता की हकदार, फेमिली कोर्ट के आदेश पर मुहर

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि पत्नी के पास अलग रहने के पर्याप्त कारण हैं तो वह गुजारा–भत्ता की हकदार है। इस टिप्पणी संग न्यायमूर्ति मदन पाल सिंह की एकल पीठ ने परिवार न्यायालय के आदेश को चुनौती देने वाली मनोज यादव की आपराधिक पुनरीक्षण याचिका खारिज कर दी।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि पत्नी के पास अलग रहने के पर्याप्त कारण हैं तो वह गुजारा–भत्ता की हकदार है। इस टिप्पणी संग न्यायमूर्ति मदन पाल सिंह की एकल पीठ ने परिवार न्यायालय के आदेश को चुनौती देने वाली मनोज यादव की आपराधिक पुनरीक्षण याचिका खारिज कर दी।

ललितपुर निवासी मनोज का कहना था कि पत्नी 2005 से बिना किसी कारण के उससे अलग रह रही है। उसने वैवाहिक दायित्वों का पालन नहीं किया। यह क्रूरता की श्रेणी में आता है। साथ ही पत्नी एक वकील है और उसकी मासिक आय 30 हजार रुपये है। इसलिए उसे गुजारा–भत्ता नहीं दिया जाना चाहिए।

पश्चिम एशिया के जंग की आंच घरों तक पहुंची, लोगों की बढ़ी चिंता

प्रयागराज। पश्चिम एशिया में छिड़े ईरान–अमेरिका–इस्राइल जंग के साथ ही गैस सिलिंडर को लेकर नए नियमों ने लोगों की परेशानी और बढ़ा दी है। इसका असर बुधवार को झूंसी से लेकर हनुमानगंज और सहसों में देखने को मिला। पश्चिम एशिया में छिड़े ईरान–अमेरिका–इस्राइल जंग के साथ ही गैस सिलिंडर को लेकर नए नियमों ने लोगों की परेशानी और बढ़ा दी है। इसका असर बुधवार को झूंसी से लेकर हनुमानगंज और सहसों में देखने को मिला। यहां के तकरीबन हर गैस एजेंसी पर लोगों की भीड़ उमड़ी। ग्राहक लगातार गैस एजेंसी के कर्मचारियों से एक सिलिंडर उपलब्ध कराने की सिफारिश करते नजर आए। गैस एजेंसीज के संचालकों का कहना है कि अब सरकारी नियमों के अनुसार ही बुकिंग करके सिलिंडर दिया जाएगा। एलपीजी को लेकर शुरू हुई हायतौबा ने लोगों की बेचैनी बढ़ा दी है। गंगापार की विभिन्न गैस एजेंसियों पर लोगों की भीड़ बढ़ने लगी है। कई ग्राहक तो तय समय से पहले ही गैस सिलिंडर बुक करा रहे हैं, तो कुछ अतिरिक्त सिलिंडर लेने की कोशिश कर रहे हैं। लीलापुर रोड स्थित झूंसी इंडेन गैस एजेंसी के गोदाम पर बुधवार को सुबह से ही सिलिंडर के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। इस दौरान गोदाम के बाहर जुटे लोग अपने गैस बुकिंग के परचे लेकर सिलिंडर देने की जिद पर अड़े थे।

जेनेटिक जांच से 15 साल पहले पता चल जाएगा डायबिटीज होगी या नहीं, एंटीऑक्सीडेंट जीन वेरिएंट की हुई पहचान

प्रयागराज। जेनेटिक जांच से 15 साल पहले पता चल जाएगा डायबिटीज होगी या नहीं। संभावित खतरे का पता लगाने वाले एंटीऑक्सीडेंट जीन की पहचान कर ली गई है। एंटीऑक्सीडेंट जीन वेरिएंट शरीर में सक्रिय एंजाइम की कमी का कारण बनते हैं, जिन्हें रिस्क वेरिएंट कहा जाता है। वैज्ञानिकों ने डायबिटीज (मधुमेह) के संभावित खतरे का पता लगाने वाले जीन की पहचान कर ली है, जो 10 से 15 साल पहले यह बता देगा कि भविष्य में डायबिटीज होगी या नहीं।

शरीर में मौजूद कुछ एंटीऑक्सीडेंट जीन जैसे सीएटी, जीएसटीपी–वन, जीपीएक्स–वन, एसओडी–टू में होने वाले बदलाव डायबिटीज के खतरे से जुड़े हैं। शरीर में बनने वाले ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस को नियंत्रित करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

जब इन जीन में विशेष प्रकार के बदलाव होते हैं तो भविष्य में टाइप–टू डायबिटीज होने का खतरा बढ़ जाता है। एंटीऑक्सीडेंट जीन वेरिएंट शरीर में सक्रिय एंजाइम की कमी का कारण बनते हैं, जिन्हें रिस्क वेरिएंट कहा जाता है।

इनकी जेनेटिक जांच के जरिये 10 से 15 साल पहले संभावित खतरे का भांपा जा सकता है। शोधकर्ताओं के अनुसार जेनेटिक स्क्रीनिंग को स्वास्थ्य व्यवस्था का हिस्सा बनाया जाए तो समय रहते डायबिटीज की पहचान की जा सकती है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) की आणविक एवं मानव आनुवंशिकी प्रयोगशाला के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. पुष्पांक वत्स और उनकी टीम के इस शोध को अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका 'करेंट फार्माकोजीनोमिक्स एंड पर्सनलइज्ड मेडिसिन' में प्रकाशित किया गया है। शोध में परिवारों के आनुवंशिक विश्लेषण के आधार पर बीमारी के जोखिम को समझने का प्रयास किया गया है।

शोध के दौरान 48 लोगों पर अध्ययन

डॉ. वत्स ने भारत के नौ परिवारों के 48 लोगों पर अध्ययन किया। इन परिवारों में कम से कम एक सदस्य को टाइप–2 डायबिटीज थी। इन सभी लोगों के डायबिटीज के स्तर, बॉडी मास इंडेक्स, कमर–कूल्हे के अनुपात और उनके डीएनए में मौजूद कुछ खास जीन वेरिएंट का विश्लेषण किया गया। पाया गया कि कुछ विशेष जीन वेरिएंट ऐसे हैं, जो यह संकेत दे सकते हैं कि किसी व्यक्ति को भविष्य में डायबिटीज होने का कितना खतरा है।

समय रहते सावधानी से कम हो सकता है खतरा

कैंटोनमेंट जनरल हॉस्पिटल के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. एसके पांडेय बताते हैं कि जीवनशैली में बदलाव करके इस बीमारी को काफी हद तक टाला जा सकता है। संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, वजन नियंत्रण और समय–समय पर स्वास्थ्य की जांच जैसी आदतें अपनाने से डायबिटीज के खतरे को कम किया जा सकता है।

क्या है जेनेटिक स्क्रीनिंग

जेनेटिक स्क्रीनिंग ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें किसी व्यक्ति के डीएनए की जांच करके यह देखा जाता है कि उसमें बीमारी से जुड़े जीन मौजूद हैं कि नहीं। इस तकनीक की मदद से डॉक्टर यह अंदाजा लगा सकते हैं कि किसी व्यक्ति को भविष्य डायबिटीज का कितना जोखिम है।

मां ने ही कर दी अपने चार माह के बेटे की हत्या, पति से झगड़े के बाद उठाया खौफनाक कदम

प्रयागराज। पति से झगड़े के बाद महिला ने अपने चार माह के बेटे की ईंट से कूंचकर हत्या कर दी। शव को रसोईघर में रखे लकड़ी के ढेर में छिपा दिया। काफी देर तक बच्चे के न दिखने पर परिजनों ने जब खोजबीन शुरू की। पूछने पर मां कुछ बोल भी नहीं रही थी। रात में करीब 10 बजे उसने बच्चे की हत्या की बात कुबूल की। गंगापार इलाके के सरायममरेज थाना क्षेत्र में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। आरोप है कि एक मां ने चार माह के बेटे ईश्वर की हत्या कर दी है। घटना पिलखिनी गांव की बताई जा रही है। पुलिस ने आरोपी मां को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

पिलखिनी गांव के पूरे जयसिंह निवासी संतोष यादव खेती बारी और मजदूरी करता है। उसकी शादी मनोरमा यादव से हुई है। दोनों को चार माह

का एक बच्चा ईश्वर है। बताया जाता है पति–पत्नी में आए दिन खाना बनाने और अन्य बातों को लेकर विवाद होता रहता है। पिछले तीन चार दिनों से लगातार दोनों में झगड़ा चल रहा था। पुलिस के अनुसार पति से झगड़े के बाद अनुराधा ने अपने बेटे ईश्वर (4 माह) की घर में ही सिर पर ईंट से मारकर हत्या कर दी। इसके बाद शव को रसोई घर में रखे लकड़ी के ढेर में छिपा दिया। इसके बाद अपने काम में जुट गई।

काफी देर तक बच्चे को न देखकर पति और परिवार के अन्य लोग परेशान थे। पूछने पर मनोरमा कुछ बता भी नहीं रही थी। परेशान परिजनों ने जब काफी दबाव डाला तो बुधवार रात्रि करीब 10 बजे महिला ने बेटे की हत्या की बात बताई। इसके बाद परिजनों ने शव को निकाला। सूचना पाकर सुबह पुलिस पहुंच गई। बताया जाता है कि महिला के खिलाफ हत्या और साक्ष्य छिपाने की एफआईआर दर्ज कराई गई है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

घटना को लेकर पूरे इलाके में चर्चा है। एसीपी हंडिया ने बताया कि आरोपी महिला का मानसिक संतुलन ठीक नहीं लग रहा है। इसके विरुद्ध एफआईआर लिखकर अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

अधिकारियों ने ठेकेदारों के भरोसे छोड़ा एसआरएन अस्पताल...सात साल में नहीं बना बच्चों का विंग

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने स्वरूप रानी नेहरू (एसआरएन) अस्पताल में प्रस्तावित चिल्ड्रेन वार्ड (विंग) के निर्माण का प्रोजेक्ट सात साल बाद भी पूरा नहीं होने पर कड़ी नाराजगी जताई है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने स्वरूप रानी नेहरू (एसआरएन) अस्पताल में प्रस्तावित चिल्ड्रेन वार्ड (विंग) के निर्माण का प्रोजेक्ट सात साल बाद भी पूरा नहीं होने पर कड़ी नाराजगी जताई है। कहा, इतने लंबे समय तक प्रोजेक्ट का अधूरा रहना सूबे के जिम्मेदार अधिकारियों की घोर उदासीनता को दर्शाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस महत्वपूर्ण परियोजना को पूरी तरह यूपी सिडको और ठेकेदारों के भरोसे छोड़ दिया गया है।

यह टिप्पणी न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल की एकल पीठ ने डॉ. अरविंद गुप्ता की याचिका पर सुनवाई करते हुए की। मामले

में यूपी सिडको के प्रबंध निदेशक, मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य और एसआरएन अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक को 23 मार्च को व्यक्तिगत रूप से तलब किया है। कोर्ट ने उनसे पूछा है कि वे बताएं कि अस्पताल विस्तार के लिए प्रस्तावित 31,314 वर्ग मीटर भूमि के हस्तांतरण में आखिर देरी क्यों हो रही है।

कोर्ट ने कहा–दो से तीन महीने में काम पूरा करने का दिया जाता है भरोसा, फिर नई समय सीमा

बच्चों की स्वास्थ्य सेवाओं जैसे संवेदनशील विषय पर अधिकारियों की सुस्ती पर कोर्ट ने हैरानी भी जताई। कहा कि हर बार अदालत को दो–तीन महीने में काम पूरा करने का भरोसा दिया जाता है, लेकिन सात साल बाद भी परियोजना अधूरी है और अब फिर नई समय सीमा बताई जा रही है। ऐसा लगता है जैसे लखनऊ में बैठे बड़े अधिकारी इस परियोजना की निगरानी ही नहीं कर रहे हैं, न ही प्रयागराज की स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रति गंभीर हैं। इसका नतीजा है कि मरीजों को इलाज के लिए लखनऊ और दिल्ली का रुख करना पड़ता है।

न्यायिक आदेश को उच्च अदालत ने स्थगित नहीं किया तो उसका पालन अनिवार्य

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि सक्षम क्षेत्राधिकार वाली अदालत की ओर से पारित न्यायिक आदेश को उच्च अदालत ने स्थगित नहीं किया तो उसका पालन अनिवार्य है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि सक्षम क्षेत्राधिकार वाली अदालत की ओर से पारित न्यायिक आदेश को उच्च अदालत ने स्थगित नहीं किया तो उसका पालन अनिवार्य है। यदि राज्य आदेशों का पालन नहीं करता है तो उल्लंघन माना जाएगा। ऐसे में राज्य के अधिकारियों को अवमानना के लिए दंडित किया जाना चाहिए। कोर्ट ने सिविल कोर्ट मऊ के यथास्थिति बनाए रखने व अदालत के अवमानना नोटिस के बावजूद आदेश की अवहेलना जारी रखने को गंभीरता से लिया है। कोर्ट ने एसडीएम मधुबन राजेश अग्रवाल को 13 मार्च 2026 को तलब किया है। कोर्ट ने यह भी कहा है कि यदि हाजिर नहीं होते हैं तो गैर जमानती वारंट जारी किया जाएगा। साथ ही राज्य सरकार को याची की जमीन पर सड़क निर्माण रोकने का भी आदेश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन और न्यायमूर्ति सिद्धार्थ नंदन की खंडपीठ ने आशा त्रिपाठी की याचिका पर दिया है। याची ने जमीन विवाद को लेकर विपक्षियों के खिलाफ सिविल वाद दायर किया था। सिविल कोर्ट ने यथास्थिति बनाए रखने का आदेश दिया था। इसके बाद भी सरकार ने याची की जमीन पर सड़क का निर्माण जारी रखा। याची ने सिविल कोर्ट में अवमानना अर्जी दायर की, जिस पर कोर्ट ने अवमानना नोटिस जारी किया है। इसके बाद भी निर्माण जारी रहा। तब याची ने हाईकोर्ट में याचिका दायर कर सड़क निर्माण पर रोक लगाने की मांग की। कोर्ट ने कहा कि राज्य के अधिकारी अदालत के आदेश का उल्लघंन कर रहे हैं। ऐसे अधिकारियों को दंडित करना चाहिए। कोर्ट ने एसडीएम को तलब किया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एडीएम वित्त एवं राजस्व आजमगढ़ की ओर से गुंडा नियंत्रण कानून के तहत जारी नोटिस को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी। साथ ही याची को कारण बताओ नोटिस का जवाब सक्षम अधिकारी के समक्ष दाखिल करने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति राजीव मिश्रा और न्यायमूर्ति लक्ष्मीकांत शुक्ला की खंडपीठ ने बीरेंद्र बहादुर यादव की ओर से दायर याचिका पर दिया। याची की ओर से अधिवक्ता ने दलील दी कि एडीएम ने आवश्यक तथ्यों पर विवेक का इस्तेमाल किए बिना मनमाने ढंग से नोटिस जारी किया है। यह कार्रवाई हाईकोर्ट के आंचल यादव प्रकरण में दिए गए फैसले के विपरीत की गई है। इसलिए गुंडा एक्ट के तहत जारी नोटिस को रद्द किया जाए।

घर में नमाज पढ़ने से रोकने के मामले में बरेली के डीएम-एसएसपी तलब

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बरेली में एक घर में नमाज पढ़ने पर पुलिसिया कार्रवाई और उसके बाद पीड़ित को मिलीं धमकियों को गंभीरता से लिया है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बरेली में एक घर में नमाज पढ़ने पर पुलिसिया कार्रवाई और उसके बाद पीड़ित को मिलीं धमकियों को गंभीरता से लिया है। कोर्ट ने डीएम अविनाश सिंह और एसएसपी

अनुराग आर्य को अवमानना का दोषी मानते हुए 23 मार्च को व्यक्तिगत रूप से पेश होने का आदेश दिया है। कहा है कि तय समय पर उपस्थित नहीं होते हैं तो गैर–जमानती वारंट जारी किया जाएगा। यह आदेश न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन और न्यायमूर्ति सिद्धार्थ नंदन की खंडपीठ ने तारिक खान की याचिका पर दिया है। बुधवार को मामले की सुनवाई के दौरान घर के मालिक हसीन खान ने अदालत के सामने बयान दर्ज कराया। बताया कि 16 जनवरी 2026 को परिवार के साथ वह घर में नमाज पढ़ रहे थे, तब पुलिस उन्हें उठाकर ले गई और उनका चालान कर दिया।

न्यायमूर्ति के पारित आदेश पर अभद्र टिप्पणी करने वाले दो सगे भाई गिरफ्तार

प्रयागराज। कैंट पुलिस ने हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति के पारित आदेश की छायाप्रति सोशल मीडिया पर लगाकर अभद्र टिप्पणी करने वाले दो सगे भाइयों को गिरफ्तार किया है। कैंट पुलिस ने हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति के पारित आदेश की छायाप्रति सोशल मीडिया पर लगाकर अभद्र टिप्पणी करने वाले दो सगे भाइयों को गिरफ्तार किया है। कैंट पुलिस ने बताया कि 24 फरवरी को हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति के पारित आदेश की छायाप्रति 'अश्वनी अंबेडकर मूल निवासी' नाम से बनी फेसबुक प्रोफाइल पर अटैच कर न्यायमूर्ति के खिलाफ अभद्र टिप्पणी की गई थी। मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने जालौन के रूरा अडडू पिया निरंजनपुर, उरई निवासी दो सगे भाइयों दीपक कुमार और देविंदर पुत्र संतोष कुमार को गिरफ्तार किया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम–2005 की धारा–20 के तहत जुर्माना और दंडात्मक कार्रवाई तभी की जा सकती है, जब संबंधित अधिकारी ने जानबूझकर या बिना ठोस कारण के सूचना देने में देरी की हो। इस टिप्पणी संग न्यायमूर्ति अजित कुमार, न्यायमूर्ति स्वरूपमा चतुर्वेदी की खंडपीठ ने याची आईपीएस अधिकारी शैलेश यादव के खिलाफ जुर्माना व अनुशासनात्मक की कार्रवाई रद्द कर दी।शैलेश गाजियाबाद में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय में क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी के रूप में तैनात थे। उस दौरान उनके पास सूचना अधिकारी का पदभार भी था। एक व्यक्ति ने उनसे पासपोर्ट के संबंध में जन सूचना अधिकार के तहत कुछ जानकारी मांगी थी। निर्धारित समय में सूचना नहीं मिली तो मामला केंद्रीय सूचना आयोग तक पहुंच गया। इस पर तत्कालीन सूचना आयुक्त ने वर्ष 2006–2007 में याची पर 25 हजार रुपये का जुर्माना लगा दिया और अनुशासनात्मक कार्रवाई का भी आदेश दिया। इस फैसले को याची ने हाईकोर्ट में चुनौती दी।

अधिवक्ता ने दलील दी कि याची पर बिना किसी ठोस आधार के पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर अधिकतम 25 हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया है। विभाग ने आंतरिक जांच रिपोर्ट में यह माना है कि पासपोर्ट कार्यालय में कर्मचारियों की भारी कमी और कार्यभार की अधिकता थी। इससे सूचना सही समय पर नहीं दी जा सकी। विभाग की जांच रिपोर्ट का आयोग ने संज्ञान नहीं लिया।

प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी निदेशक को कारण बताओ नोटिस

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आदेश की अवहेलना पर प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी विभाग के निदेशक को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। पूछा है कि उनके खिलाफ अवमानना के तहत कार्यवाही क्यों न की जाए। यह आदेश न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल की एकल पीठ ने प्रयागराज के असद उल्लाह की ओर से दायर अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया।

याची का कहना था कि हाईकोर्ट ने 28 मार्च 2025 को रिट याचिका का निस्तारण करते हुए निर्देश दिया था कि वह शिकायत से संबंधित प्रत्यावेदन सक्षम प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करें। संबंधित अधिकारी दो माह में कारणयुक्त व स्पष्ट आदेश पारित करते हुए उस पर निर्णय लें। 21 अप्रैल को निदेशक को व्यक्तिगत रूप से उपस्थित रहने का निर्देश दिया है।

दोषियों की सजा पर रोक, अपील लंबित रहने तक जमानत पर रिहाई का आदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने स्वरूप रानी नेहरू (एसआरएन) अस्पताल में प्रस्तावित चिल्ड्रेन वार्ड (विंग) के निर्माण का प्रोजेक्ट सात साल बाद भी पूरा नहीं होने पर कड़ी नाराजगी जताई है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आपराधिक मामले में दो दोषियों की पांच साल की सजा पर अपील लंबित रहने तक रोक लगा दी है। कहा कि अपील पर जल्द सुनवाई की संभावना नहीं है। आरोपियों ने सजा का काफी हिस्सा जेल में काट लिया है। इसलिए शेष सजा स्थगित की जाती है। यह आदेश न्यायमूर्ति मनोज बजाज की एकल पीठ ने हरीश चंद्र सिंह और अन्य की ओर से दाखिल याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया।

आरोपी हरीश चंद्र सिंह और अमरीश सिंह सैथवार के खिलाफ संतकबीर नगर के बखीरा थाने में गैर–इरादतन हत्या समेत गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया था। जिला न्यायालय के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने आरोपियों को दोषी मानते हुए पांच–पांच साल के कठोर कारावास और जुर्माने की सजा सुनाई थी। याची के अधिवक्ता प्रदीप पांडे ने दलील दी कि ट्रायल कोर्ट ने साक्ष्यों का सही मूल्यांकन नहीं किया है। अभियोजन पक्ष की कहानी में कई महत्वपूर्ण विसंगतियां हैं। हरीश चंद्र सिंह एक साल तीन माह और अमरीश सिंह दो साल से अधिक समय से जेल में हैं। शासकीय अधिवक्ता ने दलील की अभियोजन ने दोषियों के अपराध को सिद्ध करने के लिए ठोस साक्ष्य प्रस्तुत किए थे। कोर्ट ने कहा कि आरोपियों ने ट्रायल के दौरान जमानत की शर्तों का दुरुपयोग नहीं किया और अपील की जल्द सुनवाई संभव नहीं दिखती। ऐसे में यदि सजा स्थगित नहीं की गई तो अपील निरर्थक हो सकती है। कोर्ट ने शेष सजा को निलंबित करते हुए दोनों आरोपियों को मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट संतकबीर नगर की संतुष्टि के अनुसार निजी मुचलका और जमानतदार देने पर रिहाई का आदेश दिया।

परास्नातक स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन

प्रयागराज। त्रिदिवसीय त्रिवेणिका संस्कृत समारोह के अन्तर्गत आज परास्नातक स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिसमें शास्त्रार्थ प्रतियोगिता में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मिथिलेश्वर मिश्र तथा राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के विशाल द्विवेदी ने प्रथम स्थान, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के रूपांश जैन ने द्वितीय स्थान तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय की

रिया यादव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के विशाल द्विवेदी ने प्रथम स्थान तथा रिया यादव, अवधेश कुमार तथा शशांक ने द्वितीय स्थान एवं रूपांश जैन एवं मिथिलेश्वर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। श्लोक पाठ प्रतियोगिता में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रशांत कुमार सिंह ने प्रथम स्थान, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के विशाल द्विवेदी ने द्वितीय स्थान तथा रिया यादव और अवधेश कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिताओं का निर्णय डॉ संदीप कुमार यादव, डॉ निशा खन्ना तथा प्रो. सुरेन्द्र पाल सिंह ने किया। कल दिनांक 13 मार्च 2026 को शास्त्रार्थ में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को त्रिवेणिका गौरव सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।

कानपुर इकाई की काव्य गोष्ठी संपन्न

कानपुर। शहर समता विचार मंच कानपुर इकाई की महिला काव्य गोष्ठी श्रद्धा श्रीवास्तव के संयोजन एवम् अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस काव्यगोष्ठी की मुख्य अतिथि रेखा श्रीवास्तव रहीं। यह काव्य गोष्ठी दोपहर 12रू30 बजे सै 1रू30बजे तक चली जिसका शुभारंभ अध्यक्षता कर रही श्रद्धा

श्रीवास्तव द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती की मूर्ति में माल्यार्पण द्वारा किया गया। सरस्वती वंदना की सुंदर प्रस्तुति सुनीता गुप्ता द्वारा की गयी। काव्य गोष्ठी का कुशल संचालन हेमा पांडे ने किया। इस काव्य गोष्ठी में सुषमा त्रिपाठी, सुनीता गुप्ता,,पुष्पा सिंह, पूनम पांडे,कनक लता गौड़,,हेमा पांडे,रेखा श्रीवास्तवएवम् श्रद्धा श्रीवास्तव ने अपनी सुंदर रचनाओं की प्रस्तुति द्वारा आयोजन में चार चांद लगा दिये। धन्यवाद ज्ञापन श्रद्धा श्रीवास्तव ने किया।

एनयूजे प्रयागराज 23 मार्च को मनायेगा शहादत दिवस, आयोजन समिति गठित

—कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष प्रदेश महामंत्री तथा प्रदेश कोषाध्यक्ष हो सकते हैं शामिल

प्रयागराज। नेशनल यूनियन आफ जर्नलिस्ट (इंडिया) प्रयागराज इकाई दूारा प्रस्तावित 23 मार्च को शहीद दिवस कार्यक्रम को लेकर कार्यक्रम संचालन समिति का गठन कर दिया गया है।

इस समिति में पवन दिवेदी संरक्षक, उमेश श्रीवास्तव सलाहकार बोर्ड सदस्य, गिरीश पान्डेय सलाहकार बोर्ड सदस्य अश्वनी श्रीवास्तव सलाहकार सदस्य बोर्ड, कुन्दन श्रीवास्तव अध्यक्ष, मुलायम सिंह विशेन वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अखिलेश शुक्ला महामंत्री, चित्रांशी यादव संगठन मंत्री, मधुर दरबारी उपाध्यक्ष, सुशांत त्रिपाठी उपाध्यक्ष, शाहिद खान उपाध्यक्ष, राम बाबू उपाध्यक्ष, मनोज कुमार कोषाध्यक्ष, सैय्यद सुहेल हनीफ मंत्री, देवेन्द्र शुक्ला मंत्री और अमित श्रीवास्तव मंत्री प्रोटोकाल शामिल हैं।

यह जानकारी देते हुए जिला अध्यक्ष कुन्दन श्रीवास्तव ने बताया कि सलाहकार समिति के सदस्य उमेश श्रीवास्तव के आवास पर हुई बैठक में इस कमेटी हेतु सदस्यों का चयन किया गया। यही कमेटी कार्यक्रम की व्यवस्था करेगी।

निकाली गई प्रतीकात्मक दांडी यात्रा, डॉ. सुधीर महादेव ने दिखाई हरी

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ में महात्मा गांधी के ऐतिहासिक दांडी मार्च की स्मृति में गुरुवार को जन भवन से लखनऊ विश्वविद्यालय तक एक प्रतीकात्मक दांडी यात्रा निकाली गई। यह पदयात्रा राज्यपाल आनंदीबेन पटेल के मार्गदर्शन में आयोजित की गई। यात्रा को विशेष कार्याधिकारी (अपर मुख्य सचिव स्तर) डॉ. सुधीर महादेव बोबडे ने जन भवन से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। पदयात्रा जन भवन परिसर से शुरू होकर लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय हाल में जाकर संपन्न हुई। यात्रा से पहले जन भवन परिसर में स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। इसके बाद पदयात्रा हजरतगंज चौराहा स्थित गांधी प्रतिमा, खादी आश्रम, परिवर्तन चौक और हनुमान सेतु होते हुए विश्वविद्यालय पहुंची। इस दौरान हजरतगंज और गांधी आश्रम में भी गांधी जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर डॉ. सुधीर महादेव बोबडे ने कहा कि दांडी यात्रा केवल नमक कानून के विरोध का आंदोलन नहीं थी, बल्कि अन्याय के खिलाफ सत्य, साहस और जनशक्ति की अद्भुत अभिव्यक्ति थी। उन्होंने कहा कि गांधी जी के नेतृत्व में शुरू हुई इस ऐतिहासिक यात्रा ने पूरे देश में स्वतंत्रता की चेतना जगाई। कार्यक्रम में विशेष कार्याधिकारी (शिक्षा) डॉ. पंकज एल. जानी ने कहा कि दांडी यात्रा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जो स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और संघर्ष की याद दिलाता है। उन्होंने बताया कि 6 अप्रैल 1930 को दांडी में महात्मा गांधी ने नमक कानून तोड़कर सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की थी। विशेष कार्याधिकारी अशोक देसाई ने कहा कि दांडी मार्च सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित ऐतिहासिक आंदोलन था, जिसने विश्व समुदाय को यह संदेश दिया कि भारत का स्वतंत्रता संघर्ष अहिंसक और जनआधारित है।

चतुर्दशविद्या में लोक और परलोक का व्यवहारज्ञान समाहित

प्रयागराज। भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय परिसर के जी सिक्स सभागार में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का गुरुवार को उद्घाटन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. रामसेवक दुबे रहे। सारस्वत अधिक के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के आचार्य प्रो. रामनाथ झा उपस्थित रहे। संगोष्ठी की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. अखिलेश कुमार सिंह ने की। सर्वप्रथम अतिथियों ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण दीप प्रज्ज्वलन किया। श्री दत्तात्रेय वेद विद्यालय अरैल के बटुकों ने वैदिक मंगलाचरण किया। समन्वयक संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. विवेक कुमार सिंह ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि शास्त्र के माध्यम से लोक का व्यावहारिक चिन्तन संगोष्ठी का लक्ष्य है। संयोजक डॉ. प्रवीण कुमार द्विवेदी ने विषय प्रवर्तन किया। मुख्य अतिथि प्रो. रामसेवक दुबे ने अपने उद्बोधन में कहा कि इन चौदह शास्त्रों में लोक से परलोक विचार का सूक्ष्म व्यवहार ज्ञान है। जो लोक में है वही शास्त्र में है। सारस्वत अतिथि प्रो.

रामनाथ झा ने कहा कि चतुर्दशविद्या में भारतीय अस्मिता की छवि है। अनुभावाश्रित ज्ञान का भी ज्ञान समाहित है। संगोष्ठी के अध्यक्ष माननीय कुलपति डॉ. अखिलेश कुमार सिंह ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा के पोषण में चौदह शास्त्रों की आवश्यकता आज सर्वाधिक है।। कुलानुशासक प्रो. राजकुमार गुप्त ने कहा कि शास्त्र लोक पर अनुशासन करता है। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. आशुतोष कुमार सिंह ने भी संगोष्ठी में अपने विचार रखे। विभिन्न परिचर्चा सत्र में विद्वानों ने लगभग चालीस शोधपत्रों का वाचन किया गया। सांध्यकालीन सांस्कृतिक सत्र में रायबरेली के कवि देवी प्रसाद मिश्र वेदान्ती की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। कवि प्रो. राजेन्द्र त्रिपाठी रसराज, डॉ. सूर्यकान्त त्रिपाठी, नीलम तिवारी, डॉ. मुबश्शिर फूलपुरी, कपिल तिवारी, डॉ. तेज प्रकाश, डॉ.आरुणेय मिश्र, डॉ. अवनेन्द्र पाण्डेय, डॉ. ललित पाण्डेय, फलक अंजुम ने काव्यपाठ कर लोगों को मन्त्रमुग्ध किया। संस्कृत विभाग के शिक्षक डॉ. पीयूष मिश्र ने संगोष्ठी का संचालन किया तथा डॉ प्रिया झा ने सभी अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर प्रो. अनिल प्रताप गिरि, प्रो.एन भी सिंह, प्रो.आर के चौबे, डॉ. प्रदीप त्रिपाठी, डॉ कल्पना कुमारी, डॉ. प्रशांत सिंह, अनिल स्वामी, डॉ. दिव्या द्विवेदी, डॉ. अतुल वर्मा, डॉ. रश्मि यादव, डॉ.अंकिता मिश्रा, डॉ अतुल वर्मा, डॉ रश्मि यादव डॉ. रेनू कोचर शर्मा, डॉ. प्रचेतस, डॉ. आकांक्षा सिंह, डॉ. देवकी नंदन मिश्र, डॉ मनोज यादव इत्यादि विद्वान, प्राध्यापक, विद्यार्थीगण उपस्थित रहे। राष्ट्रगान के साथ उद्घाटन सत्र पूर्ण हुआ।

सीएमपी डिग्री कॉलेज में सात दिवसीय विशेष शिविर का तीसरा दिन

प्रयागराज। आज सीएमपी डिग्री कॉलेज के राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई संख्या 26,27,28,29,30,31,32 एवं 71 की सात दिवसीय विशेष शिविर के तीसरे दिन प्रातः सभी स्वयंसेवकों ने महाविद्यालय परिसर के साफ सफाई किया। इसके बाद राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्य गीत से आज के कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

आज के कार्यक्रम के बौद्धिक सत्र की शुरुआत ट्रैफिक इंस्पेक्टर पवन कुमार पाण्डेय जी ने किया इसमें उन्होंने ट्रैफिक और मोटर व्हीकल से जुड़े हुए विभिन्न नियमों के बारे में विद्यार्थियों को समग्र रूप से जानकारी प्रदान की एवं विद्यार्थियों के मन में मोटर व्हीकल एक्ट एवं ट्रैफिक रूल रेगुलेशन से जुड़े हुए विभिन्न शंकाओं का समाधान भी किया। इस सत्र का संचालन डॉ राम चिरंजीवी ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर यशवंत कुमार ने किया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में भारतीय विदेश नीति समकालीन चुनौतियां विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया एवं अपने–अपने विचारों को प्रस्तुत किया। वाद –विवाद प्रतियोगिता की प्रथम विजेता ज्योति त्रिपाठी रही, जो कि भारतीय विदेश नीति के पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत की, वहीं भारतीय विदेश नीति

के विपक्ष में विचार व्यक्त करने वाले प्रथम विजेता अनुज कुमार पाण्डेय रहे।

इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉक्टर रचना श्रीवास्तव एवं डॉ मुनिंद कुमार शुक्ला शामिल रहे । इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. पूजा गोंड ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सपना मौर्या ने किया। कार्यक्रम के अगले चरण में वाणिज्य संख्या के वरिष्ठ प्रोफेसर एस.के. मिश्रा के द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया और उन्होंने विद्यार्थियों को अनुशासन की महत्ता एवं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की व्यापक रणनीति कैसे बनाई जाए और राष्ट्रीय सेवा योजना से क्या सीखा जा सकता है इसके बारे में अपना उद्बोधन दिया।

इस कार्यक्रम का संचालन डॉ प्रमोद कुमार शर्मा ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ राजेश कुमार यादव ने किया।

कार्यक्रम के तीसरे सत्र में स्वयं सेवकों ने विविध प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया।

इस विशेष शिविर में निम्न कार्यक्रम अधिकारी डॉ० राजेश कुमार यादव, डॉ० राम चिरंजीव, डॉ० यशवंत कुमार, डॉ० प्रमोद कुमार शर्मा, डॉ० पूर्णेन्दु मिश्र, डॉ० सपना मौर्या, डॉ० पूजा गौड़ एवं डॉ० चन्दन कुमार उपस्थित रहे। कार्यक्रम की रिपोर्टिंग कार्यक्रम अधिकारी डॉ० चन्दन कुमार ने किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया।

सपा मुखिया अखिलेश यादव ने शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद से मुलाकात की

लखनऊ, संवाददाता। सपा मुखिया अखिलेश यादव ने शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद से गुरुवार को मुलाकात की। एक घंटे तक बातचीत हुई। इस दौरान अखिलेश जमीन पर बैठे नजर आए। बाहर निकलने पर अखिलेश ने मीडियाकर्मियों से कहा शंकराचार्य से मिलकर आ रहा हूं। उनके आशीर्वाद से अब नकली संतों का अंत होगा। अब वे लोग भी बेनकाब होंगे, जो धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह करते हैं। सबका सच सामने आएगा। अखिलेश दर्शन करने के लिए आए थे। उनके साथ सत्संग की बातें हुईं। मुलायम सिंह यादव के समय की बातें भी हुईं। हमने उनको अपनी यात्रा के बारे में बताया। अभी तक हमारे पास सरकार का कोई प्रतिनिधि नहीं आया। कहते हैं कि भाजपा हिंदुओं की पार्टी। जब हम हिंदू की बात करते हैं तो वही नहीं आते हैं, बाकी सब आते हैं। सपा मुखिया अपने आवास से दोपहर 12.30 बजे अविमुक्तेश्वरानंद से मिलने के लिए निकले और कृष्णा नगर क्षेत्र में प्रवास कर रहे शंकराचार्य के पास पहुंचे। अखिलेश ने दरवाजे पर मिले संतों से हाथ जोड़कर प्रणाम किया। उनसे आशीर्वाद लिया।

शंकराचार्य ने बुधवार को लखनऊ से गोरक्षा अभियान का शंखनाद किया था। काशी से 7 मार्च को निकलने के बाद जौनपुर, सुल्तानपुर, सीतापुर होते हुए 10 मार्च को लखनऊ पहुंचे थे। यहां शंकराचार्य की सभा को प्रशासन से 26 शर्तों के साथ अनुमति दी थी। अखिलेश ने इसे लेकर सरकार पर निशाना साधा था। अखिलेश ने कहा आज मैं शंकराचार्य से मिलने और उनका आशीर्वाद लेने आया था। हमारे यहां परंपरा रही है कि जब भी कोई नया काम शुरू किया जाता है तो सबसे पहले संत–महात्माओं का आशीर्वाद लिया जाता है। मैं भी इसी भावना से उनके पास

आया। संतों का आशीर्वाद हमेशा समाज और देश के लिए शुभ होता है। इससे सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा सपा हमेशा से गो–संरक्षण के पक्ष में रही है। हमने अपने कार्यकाल में गायों की देखभाल और उनसे जुड़े उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए थे। गाय के दूध का पहला प्लांट समाजवादी सरकार के समय कन्नौज में स्थापित किया गया था। भविष्य में भी गाय की सेवा के लिए जो कुछ कर सकते हैं, वह करेंगे। उन्होंने कहा आज देश में लोकतंत्र को कमजोर करने की कोशिश हो रही है। बीजेपी की नीतियों और कामकाज से लोकतांत्रिक संस्थाओं पर दबाव बढ़ रहा है। यह स्थिति लोकतंत्र के लिए अच्छी नहीं है। केंद्र और राज्य सरकार के गलत फैसलों का असर आम लोगों के जीवन पर साफ दिखाई दे रहा है। गैस सिलेंडर की उपलब्धता और कीमतों की वजह से लोग फिर से पुराने समय की तरह चूल्हे और लकड़ी पर खाना बनाने को मजबूर हो रहे हैं।

कहानी आँखें कहती

(छप्पय)

दो दिल का संवाद कहानी आँखें कहती।
बातें होती तेज मगर खामोशी रहती।
निश्छलता के साथ गगन छूने की बातें।
मात्र मिलन की चाह लग रहीं गहरी रातें।
शब्द प्रशंसा के सदा जोड़ सभी उम्मीद को।
आशाओं की छाँव में तरस रहे हैं दीद को।

आँखों का इकरार समर्पण दिल करता है।
मुलाकात की चाह ख्वाब बनकर जागता है।
रूहों का है इश्क मिलन की सच्ची सीढ़ी।
आकर्षण से दूर सदा रहती यह पीढ़ी।
निष्ठा अरु विश्वास ही जिसकी निज पहचान है।
प्रेम शब्द का बस यही छोटा सा उन्वान है।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

एलपीजी सिलेंडर के लिए सपा कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन, पुलिस ने सड़क पर घसीटा

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी लखनऊ में सपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने आज एलपीजी सिलेंडर के लिए प्रदर्शन किया। इस दौरान केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। पुलिस ने एक–एक कार्यकर्ताओं को हिरासत में लेना शुरू कर दिया। यह देखते ही कई कार्यकर्ता सड़क पर लेटकर नारेबाजी करने लगे। पुलिस ने घसीट–घसीटकर गाड़ी में बैठा दिया। इस दौरान कुछ कार्यकर्ता पुलिस की गाड़ी की छत पर चढ़ गए। सपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने 'नाम नरेंदर, काम सरेंडर' जैसे नारे लगाते हुए सरकार पर महंगाई को नियंत्रित करने में विफल रहने का आरोप लगाया। प्रदर्शन के कारण कुछ देर के लिए हजरतगंज चौराहे पर हलचल का माहौल रहा। सपा नेताओं का कहना है कि रसोई गैस के दाम बढ़ने से गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ रहा है। एक कार्यकर्ता ने कहा सिलेंडर का दाम बढ़ गया है, गरीब आदमी परेशान है। इस सरकार को इस्तीफा देना चाहिए। हम समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता जनता की आवाज उठाएंगे। इस सरकार को सुझाव भी देते हैं कि जल्द से जल्द सिलेंडर उपबल्ध कराए। नरेंद्र मोदी सरकार को इस्तीफा देना चाहिए। इनका कोई विजन नहीं है। केवल जनता को परेशान किया जा रहा है। सरकार किसान विरोधी, छात्र विरोधी, गरीब विरोधी है।

राजधानी में तेज धूप बढ़ा रही गर्मी, वार्म नाइट से रात में लोग हो रहे परेशान

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी लखनऊ में सुबह से चटक धूप निकली हुई है। गर्म हवा का असर सुबह से महसूस हो रहा है। मौसम विभाग का अनुमान है कि आज लखनऊ का अधिकतम तापमान 35 डिग्री और न्यूनतम तापमान 22 डिग्री के आसपास दर्ज किया जाएगा। रात का पारा सामान्य से अधिक दर्ज होने की संभावना है। इसके चलते वार्म नाइट की स्थिति बनी रहेगी। लखनऊ का अधिकतम तापमान 34.3 डिग्री सेल्सियस रहा। यह सामान्य से 3.8 डिग्री अधिक रहा। न्यूनतम तापमान 21.9 डिग्री रहा। यह सामान्य से 8.1 डिग्री अधिक रहा। अधिकतम आर्द्रता 93 फीसदी और न्यूनतम आर्द्रता 37 फीसदी रही। मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया कि फिलहाल 2 दिनों तक मौसम में कोई बड़ा बदलाव नहीं होगा, लेकिन 15 मार्च से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने के साथ में बारिश की संभावना है। इससे लगातार पड़ रही तेज गर्मी से राहत मिलेगी। इस बीच मार्च के अंत तक भीषण गर्मी का दौर बढ़ेगा। उत्तर प्रदेश में आगामी ग्रीष्म ऋतु (मार्च–अप्रैल–मई) के दौरान गर्मी का प्रकोप बढ़ने वाला है। मौसम विभाग के अनुसार, प्रदेश में औसत अधिकतम तापमान सामान्य से 1–3 डिग्री सेल्सियस अधिक और न्यूनतम तापमान सामान्य से 1–2 डिग्री अधिक रहने की संभावना है। पिछली शीत ऋतु में पश्चिमी विक्षोभों की कम सक्रियता के कारण सामान्य से कम वर्षा हुई, जिससे तापमान पहले से ही ऊपर रहा। अब भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में जारी ला–निना की स्थिति कमजोर हो रही है और यह तटस्थ नीनो में बदलने वाली है। हिंद महासागरीय द्विध्रुव भी तटस्थ रहने की उम्मीद है। इन सबके संयुक्त प्रभाव से मार्च में ज्यादातर इलाकों में अधिकतम तापमान सामान्य के आसपास रह सकता है और हीट वेव की संभावना कम है। अप्रैल–मई में पूर्वांचल और तराई इलाकों में लू के दिनों की संख्या बढ़ने का अलर्ट है। न्यूनतम तापमान भी पूरे सीजन में सामान्य से अधिक रहने की संभावना जताई गई है, जिससे रातें भी गर्म रह सकती हैं।

एसटीएफ ने 1 करोड़ के गांजे के साथ तस्कर दबोचा, उड़ीसा से डीसीएम में लाई गई खेप

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ एसटीएफ ओर निगोहां पुलिस ने 1 करोड़ के गांजे के साथ तस्कर को गिरफ्तार किया है। वह उड़ीसा से डीसीएम में गांजा की खेप लेकर आया था। उसे लखनऊ और रायबरेली में खपाना था। उसके पास से 775 किलो गांजा, डीसीएम, 2 मोबाइल और 210 रुपए बरामद हुए हैं। संयुक्त टीम ने तस्कर को बुधवार देर रात निगोहां थाना क्षेत्र के नगराम मोड़ के पास से गिरफ्तार किया गया। उसकी पहचान मुरादपुर, थाना बिंदकी, जिला फतेहपुर निवासी कौशल कुमार (22) के रूप में हुई। उसे उड़ीसा से गांजा लाने के 50 हजार रुपए मिलते थे। पुलिस ने बताया कि आरोपी बोरियों में गांजा छिपाकर लाया था। उसके पास से 31 बोरियां मिलीं। उनमें पैकेट बनाकर 775 किलो गांजा मिला। पूछताछ में उसने बताया कि डीसीएम समरजीत उर्फ सोनू गुप्ता की है। उसने ही उड़ीसा में गांजा की खेप लोड कराई थी। गांजा की खेप लखनऊ पहुंचाने के लिए 50 हजार रुपए दिए थे। आरोपी ने बताया कि यह गांजा नगराम के मयंक गुप्ता, रायबरेली के रविंद्र जायसवाल और हुसैनगंज के सैय्यद दावर अलवी को देना था।

काकोरी कूड़ा प्लांट के हेल्पर की संदिग्ध हालात में मौत, बाथरूम में मिला शव

लखनऊ, संवाददाता। काकोरी थाना क्षेत्र के शिवरी कूड़ा प्लांट में कार्यरत एक हेल्पर की गुरुवार को संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। पुलिस को गुरुवार, 12 मार्च 2026 को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) बेहटा से घटना की सूचना मिली। पुलिस टीम सीएचसी बेहटा पहुंची और जांच शुरू की। मृतक की पहचान कामता प्रसाद पांडे (51) पुत्र राम बच्चन पांडे के रूप में हुई है, जो सुल्तानपुर जिले के आशापुर, इमलिया सिकरा गांव के निवासी थे। कामता प्रसाद शिवरी कूड़ा प्लांट में हेल्पर के तौर पर काम करते थे। लेबर कॉलोनी में रहते थे।

सम्पादकीय.....

महाविनाशक अर्थव्यवस्था का दौर

अति महात्वकांक्षा एवं सुपर पावर शाक्ति प्राप्त करने के लिए अमरीका ऐसा पहली बार नही कर रहा बल्कि सौ साल पहले भी अमरीका ने हजारों कराड़ों रूपये की होली खेली है। यह युध्द्ध केवल ईरान–इजरायल युद्ध में अमेरिका के लिए घातक नही है बल्कि इसका प्रभाव अब वैश्विक स्तर पर दिखाई देने लगा है। लाखों जीवन तबाह होने के साथ जिस तरह से आर्थिक रूप से यह युद्ध तबाही की ओर बढ़ रहा है इसके परिणाम विश्व के अन्य देशों के साथ स्वंय अमरीका और इजराइल को भी भोगनें होगें। युद्ध के दो सप्ताह के अन्दर ही महंगाई की शुरूआत होना इस बॉत का संकेत है कि जितने अधिक दिनों तक यह युद्ध चलेगा इसका असर ईरान–इजरायल युद्ध में अमेरिका के साथ दुनिया भर में बढ़ता जाएगा। हम केवल आर्थिक दृष्टि से नजर डाले तो ईरान के साथ जारी सैन्य संघर्ष में अमेरिका हर दिन करीब 891 मिलियन से 1. 43 बिलियन डॉलर तक खर्च कर रहा है। यानी भारतीय मुद्रा में यह रोजाना लगभग 7,000 करोड़ से 12,000 करोड़ रुपये के बराबर है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर यह संघर्ष लंबा चला तो इसकी लागत सैकड़ों अरब डॉलर तक पहुंच सकती है। इसका सबसे बड़ा खतरा तेल आपूर्ति और वैश्विक अर्थव्यवस्था जुड चुका है। अमेरिका और इजरायल ने 28 फरवरी को ईरान पर हमला किया था। इसके बाद से ईरान ने जवाबी हमले शुरू किए थे। इस तरह से मंगलवार इस युद्ध का 11 वां दिन था। अब ईरान उन देशों को भी निशाना बना रहा है, जिनमें अमेरिकी सेना के अड्डे हैं। इस वजह से यह युद्ध कई देशों में फैल गया है। इस युद्ध की वजह से तेल–गैस के बाजार में हाहाकार मचा हुआ है। इस युद्ध में ईरान, इजरायल और अमेरिका के अलावा साइप्रस, लेबनान, ईराक, कुवैत, जॉर्डन, बहरीन, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमिरात, सीरिया, कतर, ओमान भी शामिल हैं। यानि अप्रत्यक्ष रूप से इसका असर विश्व के अंतिम छोर तक के देशों में दिखाई पड़ेगा। यानि कोविड–19 कोरोनावायरस महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव डाला। 2020 के दौरान, विश्व का कुल सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 3.4 प्रतिशत गिरा था। अब इस युद्ध ने विश्व को महाविनाशक अर्थव्यवस्था की ओर धकेल दिया है। ईरान–इजरायल युद्ध में अमेरिका की भूमिका व्यापक है। अमेरिका ने ना सिर्फ इजरायल के साथ इस जंग में हिस्सा लिया है बल्कि उसकी सहायता ने जमीन पर समीकरण बदले हैं। अमेरिका ने ही इस युद्ध की दिशा को बदल दिया है। अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी सुपरपावर है, उसके पास संसाधनों की कोई कमी नहीं। यही वजह है कि पिछले कई दशकों में जब दुनिया ने भीषण युद्ध देखे, अमेरिका ने उनमें अपनी अहम भूमिका अदा करते हुए अरबों–खरबों डॉलर खर्च किए। पहले विश्व युद्ध में अमेरिका का खुल खर्च 32 अरब डॉलर रहा था। अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध में लगभग 4.1 ट्रिलियन डॉलर खर्च किए थे। इजरायल और अमेरिका ने ईरान पर जो हमला किया है, उसकी आर्थिक कीमत बहुत बड़ी मानी जा रही है। उधर अमरीका में ही यह चर्चा शुरू हो चुकी है कि अमेरिकी सेना कुशल है, लेकिन युद्ध का अंतिम लक्ष्य अस्पष्ट है। यह सैनिकों के लिए खतरा है और प्रशासन की रणनीति लगातार बदल रही है। ट्रंप की सैन्य नीतियाँ तो और भी शानदार हैं। अमेरिकी सेना को फिर से महान बनाने के लिए अरबों डॉलर खर्च किए। ड्रोन हमले बढ़ाए। सीरिया में बम गिराए। वेनेजुएला के राष्ट्रपति का रातोंरात अपहरण कर लिया। युद्धजीवी पाकिस्तान को गोदी में बिठा लिया। ईरान को तबाह कर दिया। क्या यह शांति है ? इस युद्ध ने वेस्ट और मिडिल ईस्ट के देशों के लिए नई जियोपॉलिटिक्स की परिभाषा लिख दी है। वो ट्रंप के साथ भी नहीं रह सकते और उनके बिना भी नहीं रह सकते। युद्ध का अंत अमेरिकी सहयोगियों के लिए भी एक बारूदी सुरंग जैसा होगा। वहीं, खाड़ी में अमेरिका के प्रति लोगों का नजरिया बदलेगा, लेकिन ईरान के व्यवहार पर भी इसका असर पड़ेगा। ईरान युद्ध के नतीजे गंभीर और लगातार बढ़ते जा रहे हैं। वे दुनिया को बदलने की ओर इशारा कर रहे हैं। ट्रंप का खास तरीका है कि वे पहले से बने–बनाए ढांचों को तोड़ देते हैं, यह देखने से पहले कि टुकड़े कहां गिरेंगे और जीत का ऐलान करने का कोई तरीका ढूंढते हैं। मिडिल ईस्ट में यह तरीका लागू होने पर यह रणनीति बहुत ज्यादा रिस्की हो सकता है और साथियों के लिए इस युद्ध के अंजाम का अंदाजा लगाना नामुमकिन है।पश्चिम एशिया बारूद के ढेर पर है। इजराइल द्वारा ईरान के सैन्य और परमाणु प्रतिष्ठानों पर व्यापक बमबारी के जवाब में ईरान की बहुस्तरीय प्रतिघात रणनीति ने संघर्ष को सीमित झड़प से क्षेत्रीय युद्ध की दिशा में धकेल दिया है।

न्यायपालिका में भ्रष्टाचार की चर्चा रोकने की हड़बड़ी क्यों?

योगेन्द्र यादव

पहली नजर में बात चाय के प्याले में तूफान जैसी थी। लेकिन जरा गहराई से देखें तो एन.सी.ई.आर.टी. की किताब में न्यायपालिका के भ्रष्टाचार के जिक्र पर उठा बवाल हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की एक गहरी चुनौती की ओर इशारा करता है। सवाल यह नहीं है कि न्यायपालिका को बदनाम करने की साजिश किसने और क्यों की, असली सवाल यह है कि इस साजिश को ढूंढने और इसे रोकने की आड़ में क्या खेल हो गया। एक तीर से कितने निशाने सध गए। किस्सा मामूली सा था। केंद्रीय शिक्षा बोर्ड सी.बी.एस.ई. स्कूलों के लिए पाठ्य पुस्तक लिखने वाली संस्था एन.सी.ई.आर.टी. की 8वीं कक्षा की समाज विज्ञान की पाठ्य पुस्तक के दूसरे हिस्से में देश की राजनीतिक प्रणाली का परिचय देते हुए एक अध्याय न्यायपालिका पर है, जिसमें एक छोटा सा सैक्शन न्यायपालिका से जुड़ी समस्याओं पर है और एक पन्ना 'न्यायपालिका में भ्रष्टाचार' उपशीर्षक से है। सारा बवाल इसी एक पन्ने पर है। मजे की बात यह है कि इस हिस्से में ऐसा कुछ भी नहीं है जो विवादास्पद हो। मैं न इस किताब से जुड़ा हूं, न ही एन.सी.ई.आर.टी. की इन नई किताबों का मुरीद हूं लेकिन कम से कम इस हिस्से में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है–पूरी न्यायपालिका को भ्रष्ट बताने या फिर न्यायपालिका में भ्रष्टाचार के सनसनीखेज किस्से सुनाने जैसी कोई भी बात इस पुस्तक में नहीं है। बड़े ही सरकारी अंदाज में पुस्तक यह कहती है कि सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं की तरह न्यायपालिका की भी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। फिर बस इतना कहती है कि 'लोग न्यायपालिका के विभिन्न स्तरों पर भ्रष्टाचार का सामना करते हैं। इसके कारण गरीब और वंचित लोगों के लिए न्याय हासिल करना और भी कठिन हो जाता है। न्यायाधीशों की कमी, जटिल कानूनी प्रक्रिया और कमजोर आधारभूत ढांचे के चलते न्यायिक प्रणाली को मामलों के भारी संख्या में लंबित मामलों के बोझ का भी सामना करना पड़ता है।' इसके बाद यह बताया गया है कि न्यायपालिका ने इन चुनौतियों का सामना करने के लिए क्या कुछ किया है–सुप्रीम कोर्ट द्वारा बनाई गई आचार संहिता, आंतरिक जांच व्यवस्था का जिक्र है। कुल मिलाकर एक साधारण सी किताब का नामुराद औपचारिक सा हिस्सा है जो पढने के बाद आपको याद भी नहीं रहेगा। बहस इस पर हो सकती है कि 8वीं कक्षा के लिए इस तरह की औपचारिक सूचनाओं का क्या महत्व है। यह पूछा जा सकता है कि क्या इस किताब में कार्यपालिका और व्यवस्थापिका के भ्रष्टाचार का जिक्र भी किया गया है या नहीं। लेकिन न्यायपालिका की अवमानना जैसी कोई बात यहां थी ही नहीं। अब देखिए कि इस हिस्से पर क्या बवाल कटा। इस हिस्से को एक अंग्रेजी अखबार ने पहले पन्ने पर छाप दिया। पढ़कर ऐसा लगता था मानो पाठ्य पुस्तक में कुछ बड़ा क्रांतिकारी प्रयोग हो गया हो। बस फिर क्या था, तुरत–फुरत सुप्रीम कोर्ट ने मामले का स्वतरू संज्ञान लिया। उसी सुप्रीम कोर्ट ने, जो हर रोज अखबारों में छपने वाले नफरती बयानों या पाठ्य पुस्तकों के जरिए फैलाए जा रहे झूठ और घृणा के मामलों का स्वतरू संज्ञान कभी नहीं लेता। माननीय मुख्य न्यायाधीश ने इस सच्चाई को सामने लाने के लिए मीडिया का धन्यवाद किया। एन.सी.ई.आर.टी. को कड़ी फटकार लगाते हुए माननीय न्यायाधीश ने इसके पीछे गहरी साजिश का अंदेशा बताया। यही नहीं, कोर्ट की अवमानना के ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करने की चेतावनी देते हुए एन.सी.ई.आर.टी. को नोटिस दे दिया। कोर्ट की इस फुर्ती को देखकर न जाने कितने लोगों ने सोचा होगा–काश कोर्ट अपने अलावा दूसरों के मामले में भी इतनी ही कड़ाई और फुर्ती दिखाता। सुप्रीम कोर्ट के कितने ही आदेश फाइलों में पड़े धूल खा रहे हैं। न्यायपालिका के कितने ही आदेशों की हर रोज धज्जियां उड़ती हैं–मसलन बुलडोजर राज को रोकना या मैला उठाने की प्रथा को बंद करने के आदेश। काश सुप्रीम कोर्ट अवमानना के ब्रह्मास्त्र का प्रयोग इन मामलों में भी करता। अगर आप एक दिन किसी कचहरी में जाकर वहां व्याप्त भ्रष्टाचार की चर्चा सुन लें तो आप इस किताब तो भूल जाएंगे। कौन याद दिलाता कि कुछ ही महीने पहले पूरे देश ने दिल्ली हाईकोर्ट के एक जज साहब के कारनामे की खबरें पढ़ी हैं? कि पिछले 10 साल में उच्च न्यायपालिका में भ्रष्टाचार की 8,630 शिकायतें दर्ज हुई हैं? कौन पूछता कि इनमें से कितने मामलों की जांच हुई है? कि कितने न्यायाधीशों ने अपनी ही बनाई आचार संहिता का पालन किया है? एन.सी.ई.आर.टी. ने एकदम हथियार डाल दिए। अपनी ही किताब के हक में एक भी तर्क दिए बिना माफी मांग ली। सरकार ने हाथ खड़े कर दिए, शिक्षा मंत्रालय ने भी हाथ झाड़ लिए। किताब को रद्द ही नहीं किया गया, बल्कि इसकी प्रतियां वापस मंगा ली गईं। मानो दिन रात झूठी खबरों, नफरती भाषणों और पर्चों तथा भड़काऊ फिल्मों से भरे इस देश में 8वीं की यह किताब सबसे खतरनाक साहित्य था। माननीय न्यायाधीशों की नीयत जो भी रही हो लेकिन इस आदेश का एक ही अर्थ निकाला जाएगा–कोई भी न्यायपालिका पर उंगली उठाने की जुर्रत न करे। इससे यह संदेह पैदा होता है कि इतिहास के जिस दौर में न्यायपालिका की स्वतंत्रता और निष्पक्षता पर गहरे सवाल उठ रहे हैं, वहां अपने गिरेबान में झांकने की बजाय न्यायपालिका आलोचना का मुंह बंद कर रही है। जाहिर है इससे सरकार को भी कोई ऐतराज नहीं होगा। जब तक न्यायपालिका सरकार को अपने विरोधियों का मुंह बंद करने से न रोके। सरकार की आलोचना बंद करने पर न्यायपालिका चुप रहे और न्यायपालिका की आलोचना बंद करने पर सरकार चुप रहे–ऐसी कोई भी जुगलबंदी का संदेश लोकतंत्र के लिए घातक होगा। सवाल 8वीं कक्षा की किताब का नहीं है। सवाल उस किताब का है जिसे हम संविधान कहते हैं।

मोदी ने बना रखा है राष्ट्रपति को अपनी राजनीति का शुभंकर

अनिल जैन

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू इस बात को लेकर बहुत खिन्न हैं कि उनकी पश्चिम बंगाल यात्रा के दौरान प्रोटोकॉल संबंधी कई खामियां रहीं और जिस अंतरराष्ट्रीय संथाल सम्मेलन में वे मुख्य अतिथि थीं, उसके आयोजन के लिए राज्य सरकार ने उचित जगह उपलब्ध नहीं कराई। इस सिलसिले में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी तीखी प्रतिक्रिया जताते हुए पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस सरकार पर राष्ट्रपति को अपमानित करने का आरोप लगाते हुए कहा कि, श्राष्ट्रपति के साथ जो व्यवहार हुआ वह शर्मनाक और अभूतपूर्व है। हमारे देश में राष्ट्रपति के पद पर आमतौर पर सरकार की पसंद का या सरकारी पार्टी से जुड़ा व्यक्ति ही चुना जाता है लेकिन चुने जाने के बाद उससे अपेक्षा की जाती है कि वह दलीय राजनीति और सरकार के रोजमर्रा के कामकाज से अपने को सर्वथा दूर रखेगा। यह संविधान सम्मत अपेक्षा है, जिसके पूरा होने से इस सर्वोच्च पद की और उस पर बैठने वाले व्यक्ति की गरिमा बढ़ती है। हालांकि आमतौर पर राष्ट्रपति की तटस्थता का पलड़ा उस पार्टी या सरकार और उसकी विचारधारा की ओर ही झुका रहता है जो उसे इस पद पर पहुंचाती है। फिर भी राष्ट्रपति को दलगत राजनीति से परे रखा जाए और उन्हें लेकर किसी तरह का विवाद न हो, यह देखने का काम उनके सचिवालय और केंद्र सरकार का होता है। खुद राष्ट्रपति को तो इस बारे में सचेत रहना ही चाहिए लेकिन पिछले करीब एक दशक से ऐसा बिल्कुल नहीं हो रहा है। राष्ट्रपति को देश का अभिभावक और संविधान का संरक्षक माना जाता है परंतु हमारे यहां फखरुद्दीन अली अहमद, प्रतिभा पाटिल, प्रणब मुखर्जी, रामनाथ कोविंद आदि ने तो राष्ट्रपति पद पर रहते हुए ज्यादातर समय सरकार के अभिभावक और संरक्षक की भूमिका ही निभाई है। मौजूदा राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू भी अपने इन्हीं पूर्ववर्तियों की श्रेणी में शुमार की जाएंगी। कई मामलों में तो वे अपने इन पूर्ववर्तियों से भी आगे निकल चुकी हैं। भारत की 15वीं राष्ट्रपति के रूप में द्रौपदी मुर्मू ने अपने कार्यकाल का तीन चौथाई समय यानी पौने चार साल पूरे कर लिए हैं। अगले साल यानी 2027 में 25 जुलाई को उनका पांच वर्षीय कार्यकाल पूरा हो जाएगा। राष्ट्रपति के रूप में उनका कार्यकाल वैसे तो कई बातों के लिए याद किया जाएगा और उसकी अलग–अलग व्याख्याएं भी होंगी, लेकिन उनके कार्यकाल को सबसे ज्यादा इस बात के लिए याद किया जाएगा कि उन्होंने राष्ट्रपति के पद पर रहते हुए आमतौर पर सत्तारूढ़ पार्टी की नेता की तरह ही बर्ताव किया है।

इस सिलसिले में उनकी हाल ही की पश्चिम बंगाल यात्रा का जिक्र खास तौर पर किया जाएगा। राष्ट्रपति मुर्मू की पश्चिम बंगाल यात्रा के दौरान जो विवाद हुआ है उसे टाला जा सकता था। मगर ऐसा लगता है कि विवाद पैदा करने के लिए ही राष्ट्रपति की यह यात्रा आयोजित की गई थी।

एएसआर कॉलेज में 'एरेटे होम्योपैथिका' राज्य स्तरीय संगोष्ठी का सफल आयोजन

ताडेपल्लीगुडेम। वर्ल्ड टीचर ट्रस्ट और अलीशा एकेडमी के सहयोग से, लोकल एएसआर होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल के परिसर में 'एरेटे होम्योपैथिका' राज्य स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया। सेमिनार में राज्य भर से लगभग 300 सीनियर डॉक्टर्स, फैकल्टी मेंबर्स और स्टूडेंट्स ने हिस्सा लिया। श्रद्धांजलि – प्रेरणादायक शुरुआत

कार्यक्रम की शुरुआत में होम्योपैथी के जनक डॉ. सैमुअल हैनिमैन, एएसआर शैक्षणिक संस्थानों के संस्थापक श्री अकुला श्रीरामुलु और जगद्गुरु पीठम के संस्थापक मास्टर एककिराला कृष्णमाचार्य के चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर डॉ. आनंद कुमार पिंगली ने बोलते हुए इस सम्मेलन की सफलता के स्रोत के रूप में एएसआर समूह के अध्यक्ष डॉ. अकुला विजय वर्धन के निरंतर प्रोत्साहन और मार्गदर्शन की प्रशंसा की।

फैकल्टी का सम्मान– एएसआर कॉलेज के फैकल्टी द्वारा होम्योपैथिक चिकित्सा शिक्षा के लिए प्रदान की जा रही विशिष्ट सेवाओं को मान्यता देते हुए, वर्ल्ड टीचर ट्रस्ट के प्रतिनिधियों ने कॉलेज के सभी शिक्षण कर्मचारियों को सम्मानित किया।

आखिरी सत्र में, प्रिंसिपल डॉ. आनंद कुमार पिंगली ने "द साइंटिफिक इन्वेस्टिगेटररू केस टेकिंग एंड बोनिंग हुसैन टोटैलिटी" टॉपिक पर व्याख्यान दिया । उन्होंने साफ़ किया कि होम्योपैथी में, डॉक्टरों को 'साइंटिफिक इन्वेस्टिगेटर' बनना चाहिए जो मरीज़ को सिर्फ़ बीमारी के लक्षणों के बजाय एक इंसान के तौर पर समझें, और तभी सही 'गनशॉट' प्रिस्क्रिप्शन मिल पाएंगे।

धार्मिक सद्भाव के प्रतीक के तौर पर 'इफ़्तार दावत'

कॉन्फ्रेंस के सफल समापन के मौके पर कॉलेज के इतिहास में पहली बार एक शानदार इफ़्तार दावत का आयोजन किया गया। डॉ. आनंद कुमार ने घोषणा की कि उन्हें रमज़ान के पवित्र महीने में यह दावत आयोजित करके खुशी हो रही है और अब से, हर साल संक्रांति, विनायक चतुर्थी और क्रिसमस की तरह धार्मिक सद्भाव के प्रतीक के तौर पर इफ़्तार दावतें आयोजित की जाएंगी। इस अवसर पर एएसआर एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन के प्रतिनिधियों, स्टाफ़ और स्टूडेंट्स ने काफी संख्या में भाग लिया।

राष्ट्रपति पर राजनीति, थोथा चना, बाजे घना

पूनम आई. कौशिश

थोथा चना, बाजे घना? दो संवैधानिक पदधारकों राष्ट्रपति और मुख्यमंत्री के बीच परिहार्य वाक्युद्ध? जी हां। क्या इस पर सार्वजनिक रूप से तू–तू, मैं–मैं होनी चाहिए? बिल्कुल नहीं। इसकी शुरूआत राष्ट्रपति मुर्मू के सिलीगुड़ी में 7 मार्च को 9वें

अंतर्राष्ट्रीय संथाल सम्मेलन में भाग लेने से हुई, जहां पर पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा प्रोटोकॉल का उल्लंघन किया गया। इस सम्मेलन में आदिवासियों की कम उपस्थिति पर खिन्नता प्रकट करते हुए राष्ट्रपति ने प्रश्न उठाया कि सम्मेलन स्थल विधान नगर से गोसियापुर क्यों स्थानांतरित किया गया। उन्होंने कहा कि ममता मेरी छोटी बहन जैसी है। मैं भी बंगाल की बेटी हूं। मैं नहीं जानती कि क्या वे परेशान हैं। शायद राज्य सरकार आदिवासियों का कल्याण करना नहीं चाहती, इसलिए उन्हें यहां आने से रोका गया है। उनके इस बयान के बाद खूब शोर–शराबा हुआ। केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने ब्ल्यू बुक, जिसमें राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और उनके पारिवारिक सदस्यों के लिए सुरक्षा और प्रोटोकॉल की रूपरेखा निर्धारित की गई है, पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा राष्ट्रपति की यात्रा के दौरान उसके उल्लंघन की जांच शुरू की, जिसमें सम्मेलन में मुख्यमंत्री, राज्य के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक द्वारा राष्ट्रपति के आगमन पर उनके स्वागत में उपस्थित न होना भी शामिल है। राज्य सरकार ने यह कहते हुए किसी भी प्रोटोकॉल के उल्लंघन का खंडन किया कि राष्ट्रपति की अगुवाई सिलीगुड़ी के मेयर, पुलिस आयुक्त और जिला मैजिस्ट्रेट द्वारा की गई। इसकी बजाय ममता बनर्जी ने इस चयनात्मक विरोध पर प्रश्न उठाया और कहा कि आप तब विरोध प्रदर्शन क्यों नहीं करते, जब आदिवासियों के विरुद्ध अत्याचार होते हैं। चुनाव के समय पर भाजपा की सलाह के अनुसार राजनीति मत कीजिए, जो चुनाव के निकट आते ही बंगाल को निशाना बना रही है। ममता ने कहा कि मैं इस कार्यक्रम में भाग नहीं ले सकी क्योंकि मैं एस.आर.आई. के मुद्दे पर लोगों के लिए धरने पर बैठी हूं। मेरी प्राथमिकता क्या होनी चाहिए? राष्ट्रपति के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि मुर्मू की टिप्पणियां भाजपा द्वारा प्रभावित हैं और उन्हें यहां राजनीति करने के लिए भेजा गया है। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रपति से इस सम्मेलन में भाग लेने की अपेक्षा नहीं की जाती थी क्योंकि यह राज्य सरकार द्वारा प्रायोजित नहीं, एक निजी कार्यक्रम था और राज्य प्रशासन ने आगाह कर दिया था कि वह ऐसे सम्मेलन का आयोजन करने के लिए तैयार नहीं है, जिसमें राष्ट्रपति भी आ रही हैं। यह मामला यहीं समाप्त नहीं हुआ। ममता ने आरोप लगाया कि भाजपा राष्ट्रपति का सम्मान नहीं करती। एक सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान एक फोटोग्राफ दिखाते हुए उन्होंने बताया कि इस तस्वीर में मोदी बैठे हुए हैं और राष्ट्रपति खड़ी हैं। यह सरासर राष्ट्रपति का अपमान है। प्रधानमंत्री ने इस घटना पर टिप्पणी की कि यह शर्मनाक और अभूतपूर्व है और तृणमूल सरकार पर राष्ट्रपति का अपमान करने का आरोप लगाया। किंतु मुख्य तथ्य यह है कि राष्ट्रपति अपने समुदाय के सम्मान में आयोजित सम्मेलन में गईं और वहां उन्हें लगा कि उनका स्वागत नहीं किया जा रहा। राजनीतिक संदर्भ जो भी हो, यह ऐसा आरोप नहीं है जिसे कोई भी राज्य सरकार आसानी से नजरंदाज कर सके। चाहे कोई कार्यक्रम सार्वजनिक हो या निजी, राज्य सरकार संवैधानिक दृष्टि से राष्ट्रपति को पूर्ण वी.वी.आई.पी. सुरक्षा और व्यवस्था करने के लिए बाध्यकारी है। तथापि यह घटना अन्य सामान्य राजनीतिक टकराव से अलग है। राष्ट्रपति मुर्मू स्वयं संथाल समुदाय से हैं और वह आदिवासी समुदाय की पहली राष्ट्रपति हैं और इसीलिए उन्हें अपनी निराशा और खिन्नता व्यक्त करनी पड़ी जो केन्द्र–राज्य संबंधों को शासित करने वाले स्थापित मानदंडों से अलग हैं क्योंकि भारत के हालिया राजनीतिक इतिहास में ऐसी कोई घटना नहीं हुई जहां पर वर्तमान राष्ट्रपति ने अपनी यात्रा के दौरान राज्य सरकार के इरादों पर प्रश्न उठाया हो। वस्तुतः यह विवाद एक गरमागरम चुनावी माहौल के समय पैदा हुआ जहां पर भाजपा और तृणमूल दोनों ही इससे लाभ उठाना चाहती हैं। स्पष्ट है कि भाजपा तिल का ताड़ बनाना चाहती है क्योंकि तृणमूल कांग्रेस के साथ उसके संबंध पहले से तनावपूर्ण हैं और दोनों ही पक्ष राज्य में आगामी चुनावों से पूर्व नैरेटिव बनाना चाहते हैं। भाजपा यह स्पष्ट करना चाहती है कि राष्ट्रपति का अपमान एक गंभीर संवैधानिक मुद्दा है तो तृणमूल का कहना है कि बंगाल सरकार पर हमला करने के लिए नियमित प्रशासनिक मुद्दे को बढ़ा–चढ़ाकर पेश किया जा रहा है। समय आ गया है कि केन्द्र और राज्यों को यह समझना चाहिए कि यदि एक–दूसरे के अधिकारों और स्वायत्तता के बीच संतुलन न बनाया जाए तो उनका मान नहीं रह जाता।

प्रत्येक संघीय प्रणाली शक्ति, अधिकार और संयम के नाजुक संतुलन से चलती है। इसके लिए संघ की इच्छा और राज्य के जनादेश के बीच संतुलन बनाया जाना चाहिए। संविधान में यह संतुलन केन्द्र के पक्ष में है और यह प्रणाली इसलिए चल रही है कि केन्द्र ने परिपाटियों को माना है। इस घटनाक्रम में सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रपति की भूमिका है। संवैधानिक प्रहरी के रूप में उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे दलगत संघर्ष से उपर उठें और गणतंत्र की गरिमा का प्रतीक बनें और तुच्छ मुद्दों के लिए इसका उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए। ममता को भी समझना चाहिए कि एक स्ट्रीट फाइटर और समस्या पैदा करने वाले के रूप में उनकी प्रतिष्ठा उनके दीर्घकालीन हित में नहीं है। यह बात भाजपा पर भी लागू होती है। दोनों को यह समझना चाहिए कि सत्ता से अहंकार पैदा होता है जिसके चलते पराजय होती है।

जुनैद खान और साई पल्लवी की `एक दिन' का ट्रेलर रिलीज, फैंस बोले, प्यारी लव स्टोरी

हफ्तों के बढ़ते इंतजार के बाद, आमिर खान प्रोडक्शंस ने आखिरकार फिल्म एक दिन का ट्रेलर रिलीज कर दिया है, जिसमें साई पल्लवी और जुनैद खान लीड रोल में नजर आ रहे हैं। ट्रेलर की शुरुआत बहुत ही सुकून भरी और दिल को छू लेने वाली दुनिया से होती है, जो दर्शकों को एक जादुई और क्लासिक प्रेम कहानी की झलक देती है। ट्रेलर में जुनैद खान एक फॉर्च्यून बेल (किस्मत की घंटी) के बारे में बताते दिख रहे हैं, जिसे बजाने पर सच्चे प्यार की मुराद पूरी होती है। जब वह यह बात कह रहे होते हैं, तब वह साई पल्लवी के किरदार मीरा की तरफ देखते हैं और मन ही मन दुआ करते हैं कि काश वो उनकी हो जाए। वह कहते हैं कि वह चाहते हैं कि उनकी यह ख्वाहिश पूरी हो, भले ही सिर्फ एक दिन के लिए। ट्रेलर में जुनैद और साई पल्लवी के बीच की प्यारी केमिस्ट्री देखने को मिलती है, जो एक इमोशनल और दिल को छू लेने वाली लव स्टोरी का इशारा दे रही है। स्क्रीन पर ये दोनों साथ में बहुत ही फ्रेश और एक्साइटिंग लग रहे हैं, और उनके बीच का सहज अंदाज हर सीन में एक जादू सा पैदा कर रहा है। यह एक ऐसी केमिस्ट्री है जिसे शब्दों में बताना मुश्किल है, लेकिन देखते वक्त इसे बखूबी महसूस किया जा सकता है। दोनों किरदारों के बीच का अंतर साफ नजर आता है। जुनैद एक प्यारे और थोड़े झिझकने वाले लड़के के रूप में दिख रहे हैं, जो अपने रोल में मासूमियत और सादगी लेकर आए हैं, वहीं साई पल्लवी कॉन्फिडेंट और शांत नजर आ रही हैं। यह कॉन्ट्रास्ट उनकी केमिस्ट्री को और भी दिलचस्प और ऐसा बनाता है जिससे लोग खुद को जोड़ सकें, जिससे उनकी कहानी देखने में और भी मजेदार लगती है। यह फिल्म एक जादुई और क्लासिक प्रेम कहानी का वादा करती है, जो आजकल के बॉलीवुड में काफी कम देखने को मिलती है। इसकी कहानी कहने के अंदाज में एक पुराना आकर्षण और इमोशनल ईमानदारी है, जो दर्शकों को उन रोमांटिक फिल्मों की याद दिलाती है जिन्होंने कभी इस जॉनर की पहचान बनाई थी। मेकर्स ने अब तक जो भी कंटेंट रिलीज किया है, उसने फिल्म को लेकर पहले ही काफी जबरदस्त चर्चा और उत्सुकता पैदा कर दी है। फिल्म का टाइटल ट्रैक, जो कुछ दिन पहले रिलीज हुआ था और जिसे अरिजीत सिंह के होमटाउन में शूट किया गया है, उसे दर्शकों का शानदार रिस्पॉन्स मिला। अरिजीत की आवाज ने इस कंपोजिशन में एक अलग ही जादू भर दिया है, जिससे यह गाना और भी यादगार बन गया है। ट्रेलर वाकई बहुत प्रभावशाली है और देखने में बहुत अच्छा लगता है, क्योंकि इसमें वही क्वालिटी और कहानी नजर आ रही है जिसकी हम आमिर खान प्रोडक्शंस से उम्मीद करते हैं। जब आमिर खान क्रिएटिव प्रोसेस में शामिल होते हैं, तो यह बात साफ पता चल जाती है क्योंकि बारीकियों पर उनका ध्यान और उसका शानदार नतीजा साफ दिखाई देता है। साई पल्लवी ने इस ट्रेलर में भी अपनी एक जबरदस्त छाप छोड़ी है, और क्योंकि यह उनकी पहली हिंदी फिल्म है, तो यह देखना वाकई दिलचस्प होगा कि हिंदी दर्शक उन्हें कितना पसंद करते हैं। हालांकि, ट्रेलर देखकर यह साफ हो जाता है कि साई पल्लवी साउथ में इतनी डिमांड में क्यों रही हैं और अब हिंदी फिल्मों के लिए भी मेकर्स की पहली पसंद क्यों बनी हुई हैं। एक दिन के जरिए आमिर खान और फिल्ममेकर मंसूर खान एक लंबे अंतराल के बाद फिर से साथ आ रहे हैं, जो हिंदी सिनेमा की सबसे पसंदीदा जोड़ियों में से एक है। इस जोड़ी ने दर्शकों को कयामत से कयामत तक, जो जीता वही सिकंदर, अकेले हम अकेले तुम और जाने तू... या जाने ना जैसी यादगार फिल्में दी हैं। एक दिन के साथ यह जोड़ी एक बार फिर रोमांस जॉनर में वापसी कर रही है, जिसने फैंस के बीच एक नया उत्साह भर दिया है। इनके दोबारा साथ आने से लोगों की उत्सुकता काफी बढ़ गई है और हर कोई यह देखने के लिए बेताब है कि इस बार वे पर्दे पर क्या जादू बिखेरते हैं। आमिर खान प्रोडक्शंस के बैनर तले बनी फिल्म एक दिन में साई पल्लवी और जुनैद खान मुख्य भूमिकाओं में हैं। इस फिल्म का निर्देशन सुनील पांडे ने किया है और इसके प्रोड्यूसर्स आमिर खान, मंसूर खान और अपर्णा पुरोहित हैं। यह फिल्म 1 मई 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है।

बॉलीवुड में लौटा रिक्रिएशन ट्रेंड, धुरंधर 2 के आरी–आरी समेत इन गानों को मिला पुनर्जीवन

संगीत समय और सीमा से परे है। इसे वक्त में कैद कर पाना मुश्किल है। बॉलीवुड ने भी इसके कई उदाहरण हैं जब पुराने म्यूजिक को एक नए रंग मे घोलकर कई बार सुनने वालों के दिल जीते हैं। फिल्म धुरंधर में कई गानें पुराने पॉप गानों को अलग तरह से रिवाइव कर के बनाए गए हैं। वहीं कई ऐसे पॉपुलर गाने हैं जिनमें थोड़ा बहुत बदलाव कर किया गया है। 1999 में आई फिल्म सिर्फ तुम का गाना दिलबर दिलबर उस समय के बोल्ड गानों में से एक था। सुष्मिता सेन और संजय कपूर पर फिल्माया गए इस गाने ने सिनेमाघरों में दर्शकों के दिलों की धड़कनें बढ़ा दी थीं। इस गाने को संगीत नदीम–श्रवण ने दिया था। वहीं इसे आवाज अल्का याग्निक ने दी थी। फिर समय बदला 2018 आया इस गाने को नया रूप दिया गया। नोरा फतेही का डांस और नेहा कक्कड़ की आवाज ने फिर से एक बार इस गाने को जिंदा कर दिया। नेहा के साथ इसमे ध्वनि भानुशाली और इक्का ने भी गाने को गाया था। 1986 में रिलीज हुआ हवा–हवा मूल रूप से एक पाकिस्तानी गीत था। मगर यह भारत में काफी पॉपुलर हुआ। इस गाने को हसन जहांगीर ने गाया था। इसके बाद 1986 में इसे गोविंदा की फिल्म शबिल्लू बादशाहश में इसे भी इसका उपयोग किया गया। आधिकारिक तरीके से इसका इस्तेमाल 2017 में आई फिल्म मुबारकान में हुआ। इस गाने को मीका सिंह ने गाया था। जिसके बाद इसे आदित्य धर ने अपनी फिल्म श्धुरंधरश् का हिस्सा बनाया। कई साल बाद जब स्क्रीन पर संजय दत्त थे और ये गाना सिनेमा हॉल में गूंजा तो सुनने वालों को इसने एक बार फिर अपना कायल कर लिया। 1981 में फिल्म अरमान से सामने आया यह गाना श्रंभा होश रातों रात एक पार्टी एंथम बन गया था। ऊषा उत्थुप ने अपनी दमदार आवाज और बप्पी लाहिड़ी ने संगीत देकर इस गाने को चार–चांद लगा दिए थे। फिल्म में यह गाना कल्पना अय्यर पर फिल्माया गया था। इस गाने को रिवाइव किया गया रणवीर सिंह की धुरंधर के लिए। इस फिल्म में गाने को बप्पी लाहिड़ी, इंदीवर, शाश्वत सचदेव और मधुबंती बागची ने गाया है। फिल्म में यह गाना रणवीर सिंह पर फिल्माया गया है। 1997 में रिलीज हुई फिल्म बॉर्डर का गाना संदेशे आते हैं उस वक्त से लेकर आज तक फेवरेट सांग है। राजस्थान के रेगिस्तान में शूट किया गया ये गाना रूप कुमार राठौड़ और सोनू निगम की आवाज में दर्शकों और सुनने वालों को काफी पसंद आया था। इसी गाने को दोबारा 2026 में आई बॉर्डर 2 फिल्म का हिस्सा बनाया गया। जिसे अनु मलिक और मिथुन ने संगीत दिया। इस बार इस गाने को सोनू निगम, अरिजीत सिंह, दिलजीत दोसांझ और विशाल मिश्रा ने आवाज दी। गाने को जावेद अख्तर और मनोज मुंतशिर ने लिखा है। धुरंधर 2 द रिवेंज का पहला रिलीज हुआ गाना आरी–आरी भी ऐसी ही एक पुराने गाने से लिया गया। बारी–बरसी की धुन के आधार पर बना यह गाना काफी पॉपुलर है। पहली बार यह गाना बॉम्बे रॉकर्स ने 2003 में क्रिएट किया था। अब धुरंधर के मेकर्स ने अपने पार्ट की तरह फिर से पुराने गानों को नए रूप में पेश किया है। धुरंधर 2 द रिवेंज के ट्रेलर के साथ ही यह गाना भी रिलीज किया गया।

पंकज कपूर का खुलासा, `जब खुली किताब' की कहानी ने क्यों कर दिया था उन्हें तुरंत राजी ?

वरिष्ठ अभिनेता पंकज कपूर ने हाल ही में खुलासा किया कि आखिर उन्होंने फिल्म जब खुली किताब के लिए हाँ क्यों कहा। अपने किरदारों को चुनने में बेहद चयनात्मक माने जाने वाले पंकज कपूर ने बताया कि इस फिल्म की मजबूत स्क्रिप्ट और निर्देशक की साफ सोच ने उन्हें इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया। निर्देशक शौरभ शुक्ला की इस फिल्म में डिमप्पल कपाडिया और अपार शक्ति खुराना भी अहम भूमिकाओं में नजर आ रहे हैं। फिल्म अपनी संवेदनशील कहानी और दमदार अभिनय के कारण दर्शकों और समीक्षकों से अच्छी प्रतिक्रिया हासिल कर रही है। जब खुली किताब एक ऐसे वैवाहिक रिश्ते की कहानी है, जिसमें विश्वास की नाजुक परतों को बारीकी से दिखाया गया है। फिल्म यह सवाल भी उठाती है कि जब कोई छिपा हुआ सच सामने आता है, तो उसका असर सिर्फ पति–पत्नी ही नहीं बल्कि पूरे परिवार पर कैसे पड़ता है। फिल्म की इसी गहराई और संवेदनशील विषय ने दर्शकों का ध्यान खींचा है और इसे लेकर सकारात्मक चर्चा भी हो रही है। नए प्रोजेक्ट चुनने के अपने तरीके के बारे में बात करते हुए पंकज कपूर ने बताया कि वह ज्यादातर अपने इंट्यूशन यानी अंतर्ज्ञान के आधार पर फैसले लेते हैं। उन्होंने कहा, मैं बस अपनी उस भावना के आधार पर फैसला करता हूँ जो मुझे स्क्रिप्ट पढ़ते समय और निर्देशक से मिलने के बाद महसूस होती है– कि वह कहानी को किस तरह समझते हैं और मुझे उसका हिस्सा क्यों बनाना चाहते हैं। अगर मुझे लगता है कि किरदार और कहानी दोनों ही काबिल हैं, तो मैं उसका हिस्सा बन जाता हूँ। पंकज कपूर ने यह भी बताया कि फिल्म की थीम ने उन्हें एक अभिनेता के तौर पर गहराई से प्रभावित किया। उन्होंने कहा, यह सवाल भरोसे का है। और मुझे लगता है कि भरोसा एक बहुत मानवीय भावना है। उनके मुताबिक, यही मानवीय भावनाएं किसी कहानी को दर्शकों से जोड़ने का काम करती हैं। रिश्तों, ईमानदारी और छिपे हुए सच के परिणामों को दिखाने वाली यह भावनात्मक कहानी दर्शकों को लगातार प्रभावित कर रही है। फिल्म "जब खुली किताब" फिलहाल जी5 पर स्ट्रीम हो रही है, जहां दर्शक इसे देख सकते हैं।

शाश्वत सचदेव ने की रणवीर सिंह की तारीफ, बोले–उनकी एक्टिंग में होती है दार्शनिक गहराई...

फिल्म धुरंधर में अपने दमदार अभिनय को लेकर अभिनेता त्ंदअममत ैपदही इन दिनों खूब सुर्खियों में हैं। फिल्म इंडस्ट्री के कई दिग्गज उनके काम की सराहना कर चुके हैं और अब राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता संगीतकार व निर्माता शाश्वत सचदेव ने भी उनकी एक्टिंग की खुलकर तारीफ की है। अपनी कलात्मक समझ और अलग तरह के संगीत के लिए पहचाने जाने वाले शाश्वत सचदेव ने रणवीर के अभिनय की उस खासियत के बारे में बात की, जो उन्हें बाकी कलाकारों से अलग बनाती है। उनके मुताबिक, रणवीर सिर्फ अभिनय नहीं करते बल्कि अपने किरदारों में एक खास तरह की सोच और भावनात्मक गहराई भी जोड़ते हैं। फिल्म में रणवीर के अभिनय पर बात करते हुए शाश्वत सचदेव ने कहा, क्या आपको नहीं लगता कि रणवीर जिस तरह फिल्म में अपने किरदार को समझते और निभाते हैं, उसमें कुछ बहुत खास है? अगर रणवीर की जगह कोई और होता तो वह भी उतनी ही मेहनत करता, उतना ही अभ्यास करता और यहां तक पहुंचने के लिए संघर्ष करता। लेकिन जब आप रणवीर को देखते हैं तो हम उन्हें इसलिए सराहते हैं क्योंकि एक कलाकार के रूप में वह अपने अभिनय में एक दार्शनिक सोच और गहराई लेकर आते हैं। शाश्वत के इस बयान से साफ है कि वह मानते हैं कि हर कलाकार अपने काम के लिए मेहनत करता है, लेकिन रणवीर अपने किरदारों में एक अलग दृष्टिकोण और गहराई जोड़ देते हैं। यही वजह है कि उनका अभिनय केवल तकनीक या मेहनत तक सीमित नहीं रहता, बल्कि दर्शकों पर गहरा असर छोड़ता है। पिछले कई सालों में त्ंदअममत ैपदही ने ऐसे कई किरदार निभाए हैं, जिन्होंने दर्शकों और समीक्षकों दोनों को प्रभावित किया है। अपने किरदारों के लिए उनकी जबरदस्त तैयारी, तीव्रता और निडर अंदाज उन्हें अपनी पीढ़ी के सबसे प्रभावशाली अभिनेताओं में शामिल करता है। यही वजह है कि फिल्म "ध्ुरंधर" को लेकर भी दर्शकों के बीच काफी उत्साह देखने को मिल रहा है। फिल्म "धुरंधर" के पहले भाग ने बॉक्स ऑफिस पर कई रिकॉर्ड बनाए थे। अब इसके दूसरे भाग को लेकर भी दर्शकों की उत्सुकता काफी बढ़ गई है। फिल्म की अगली कड़ी की तैयारी शुरू हो चुकी है और माना जा रहा है कि रणवीर सिंह एक बार फिर बड़े पर्दे पर धमाकेदार प्रदर्शन करते नजर आएंगे। अगर यही रफ्तार जारी रही तो रणवीर सिंह आने वाले समय में बॉक्स ऑफिस पर एक अलग और खास मुकाम हासिल कर सकते हैं।

मृणाल ठाकुर ने की कुमकुम भाग्य की अपनी को–स्टार्स से मुलाकात, साथ नजर आई ऑनस्क्रीन मां सुप्रिया शुक्ला

बॉलीवुड अभिनेत्री मृणाल ठाकुर इन दिनों अपनी फिल्म डकैत को लेकर सुर्खियों में बनी हुई हैं। मृणाल ने हाल ही में अपने पुराने टीवी शो 'कुमकुम भाग्य' के साथियों से मुलाकात की। इस मुलाकात ने सबकी पुरानी यादें ताजा कर दीं। इस वीडियो में सब खुशी–खुशी साथ खड़े होकर फोटो खिंचवाते नजर आ रहे हैं। मृणाल लैवेंडर कलर की सुंदर सलवार–सूट में बहुत अच्छी लग रही हैं। सुप्रिया ने मृणाल के लिए लिखा, मृणाल अपने प्यारे घर में ढेर सारा प्यार, स्वादिष्ट खाना, मिठाई और ढेर सारी बातें। हम सब फिर उसी जगह पहुंच गए जहां से ये रिश्ता शुरू हुआ था। बस ऐसे ही तरक्की करती रहो मेरी प्यारी लड़की। शो में मृणाल की मां का रोल करने वाली सुप्रिया शुक्ला ने सोशल मीडिया पर कई फोटो और वीडियो शेयर किए। इनमें कई साल बाद पूरी टीम एक साथ दिख रही थी। सुप्रिया ने शो की एक सीनियर अभिनेत्री मधु राजा के जन्मदिन पर बहुत प्यारा मैसेज भी लिखा। उन्होंने लिखा, आप हजारों साल जियो। हम हमेशा ऐसे ही मिलते रहें, हंसते–खिलखिलाते रहें और गोलगप्पे, चाट–पकौड़ी खाते रहें। मृणाल ने बॉलीवुड में आने से पहले 'कुमकुम भाग्य' में बुलबुल का किरदार निभाया था, जिससे उन्हें बहुत नाम मिला। 2016 में उनके किरदार की कहानी खत्म हो गई (शो में बुलबुल की मौत दिखाई गई)। सुप्रिया शुक्ला ने शो में मृणाल की मां का रोल किया था, जबकि मुख्य किरदार सृति झा ने निभाया था। 'कुमकुम भाग्य' उस समय टीवी का सबसे पॉपुलर शो था।

इस बार शुभ दुर्लभ संयोग में होगी चैत्र नवरात्रि की शुरुआत, कलश स्थापना के बन रहे दो शुभ मुहूर्त

सनातन धर्म में चैत्र नवरात्रि का विशेष महत्व माना जाता है। साल 2026 में 19 मार्च से 27 मार्च तक चलने वाली चैत्र नवरात्रि कई मायनों में बेहद खास मानी जा रही है। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार इस बार नवरात्रि की शुरुआत ऐसे दुर्लभ संयोग के साथ हो रही है जो करीब 72 वर्षों बाद बन रहा है।

72 साल बाद बन रहा विशेष संयोग

हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि 19 मार्च को सुबह 6 बजकर 52 मिनट से शुरू होकर 20 मार्च को तड़के 4 बजकर 50 मिनट तक रहेगी। हालांकि 19 मार्च को सूर्योदय अमावस्या में होगा, इसलिए पूरे दिन अमावस्या तिथि का प्रभाव माना जाएगा और इसी दिन से नवरात्रि का शुभारंभ होगा। करीब 72 साल बाद ऐसा दुर्लभ संयोग बन रहा है जब कलश स्थापना अमावस्या तिथि में की जाएगी। 19 मार्च को कलश स्थापना के लिए दो विशेष शुभ मुहूर्त बन रहे हैं। पहला शुभ समय सुबह 6 बजकर 02 मिनट से 8 बजकर 40 मिनट तक रहेगा। इसके बाद दूसरा मुहूर्त सुबह 9 बजकर 16 मिनट से 10 बजकर 56 मिनट तक रहेगा।

घटस्थापना का विशेष महत्व

अमावस्या का समय पितरों की शांति और आध्यात्मिक साधना के लिए विशेष माना जाता है। इसलिए इस अवधि में दान–पुण्य, जप और पूजा करने से विशेष पुण्य प्राप्त होता है। नवरात्रि का पहला दिन मां शैलपुत्री की पूजा से शुरू होता है। इसी दिन घरों और मंदिरों में घटस्थापना (कलश स्थापना) की जाती है, जिसे पूरे नवरात्रि पर्व की शुरुआत माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन विधि–विधान से कलश स्थापना करने और मां दुर्गा की पूजा करने से घर में सुख–समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है।

क्या करें नवरात्रि में

घर में साफ–सफाई और पवित्रता का विशेष ध्यान रखें। मां दुर्गा के नौ रूपों की विधि–विधान से पूजा करें। दुर्गा सप्तशती या देवी मंत्रों का जाप करें। जरूरतमंदों को दान–पुण्य करें। धार्मिक मान्यता है कि नवरात्रि के नौ दिनों में सच्चे मन से की गई मां दुर्गा की आराधना भक्तों के जीवन में सुख, समृद्धि और शांति लेकर आती है। इसलिए इस बार बनने वाले दुर्लभ संयोग में पूजा–पाठ और साधना का महत्व और भी बढ़ जाता है।

कमाल का पौधा, महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए कई बीमारियों में कारगर

प्रकृति ने हमें कई ऐसे औषधीय पौधे दिए हैं जो शरीर को स्वस्थ रखने में बहुत मदद करते हैं। इन्हीं में से एक बेहद खास और लाभकारी पौधा है अशोक का पौधा। आयुर्वेद में इस पौधे का इस्तेमाल सदियों से कई तरह की बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता रहा है। खास बात यह है कि यह पौधा महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। अशोक के पेड़ की छाल, पत्ते और फूल औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। आयुर्वेदिक दवाओं में इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह शरीर को अंदर से मजबूत बनाता है और कई स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने में मदद करता है।

महिलाओं के लिए बेहद फायदेमंद

अशोक का पौधा महिलाओं की सेहत के लिए बहुत उपयोगी माना जाता है। आयुर्वेद के अनुसार यह मासिक धर्म से जुड़ी समस्याओं को कम करने में मदद करता है। जिन महिलाओं को पीरियड्स के दौरान तेज दर्द, अनियमित मासिक धर्म या ज्यादा ब्लीडिंग की समस्या होती है, उनके लिए अशोक की छाल से बनी दवा काफी लाभकारी मानी जाती है। इसके अलावा यह हार्मोनल बैलेंस को बनाए रखने में भी मदद करता है। कई आयुर्वेदिक टॉनिक और दवाओं में अशोक का इस्तेमाल महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए किया जाता है।

पुरुषों के लिए भी लाभकारी

अशोक का पौधा केवल महिलाओं के लिए ही नहीं बल्कि पुरुषों के लिए भी फायदेमंद है। यह शरीर की ताकत और ऊर्जा बढ़ाने में मदद करता है। आयुर्वेद में इसे शरीर को मजबूत बनाने और कमजोरी दूर करने के लिए भी उपयोग किया जाता है। इसके अलावा यह शरीर में खून की कमी को दूर करने और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में भी सहायक माना जाता है।

पाचन तंत्र को करता है मजबूत

अशोक के औषधीय गुण पाचन तंत्र को बेहतर बनाने में भी मदद करते हैं। अगर किसी को अपच, गैस या पेट से जुड़ी समस्याएं होती हैं तो अशोक से बनी आयुर्वेदिक दवाएं राहत दिला सकती हैं। यह पेट को साफ रखने और पाचन क्रिया को बेहतर बनाने में मदद करता है, जिससे शरीर स्वस्थ और ऊर्जावान बना रहता है।

त्वचा और शरीर के लिए भी फायदेमंद

अशोक के पौधे में एंटीऑक्सीडेंट और कई जरूरी पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो त्वचा को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। इसके नियमित उपयोग से त्वचा की चमक बढ़ सकती है और शरीर की कई छोटी–मोटी समस्याओं से भी राहत मिल सकती है।

कैसे किया जाता है इस्तेमाल

अशोक के पौधे का उपयोग कई तरीकों से किया जाता है। इसकी छाल का काढ़ा, पाउडर या आयुर्वेदिक दवाओं के रूप में सेवन किया जाता है। कई आयुर्वेदिक कंपनियां भी अशोक से बने टॉनिक और दवाएं तैयार करती हैं। हालांकि किसी भी औषधीय पौधे का इस्तेमाल करने से पहले डॉक्टर या आयुर्वेदिक विशेषज्ञ की सलाह लेना जरूरी होता है, ताकि इसे सही मात्रा में और सही तरीके से इस्तेमाल किया जा सके।

अशोक का पौधा वास्तव में एक चमत्कारी औषधीय पौधा माना जाता है। यह महिलाओं और पुरुषों दोनों के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है और कई बीमारियों में मददगार साबित हो सकता है। आयुर्वेद में इसकी अहमियत बहुत ज्यादा है और सही तरीके से इस्तेमाल करने पर यह शरीर को स्वस्थ रखने में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

ब्लड शुगर कंट्रोल करने से लेकर हार्ट को हैल्दी रखेगा रेड एलोवेरा, जानिए इस खाने के अचूक फायदे

त्वचा के लिए एलोवेरा कितना फायदेमंद होता है यह तो आप जानते ही हैं परंतु यह स्वास्थ्य के लिए भी काफी लाभकारी माना जाता है। इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्व कई तरह की समस्याओं से राहत दिलवाने में मदद करते हैं। हरा एलोवेरा तो आपने कई बार देखा होगा लेकिन लाल रंग का एलोवेरा भी स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। लाल रंग के एलोवेरा में विटामिन–ई, बी–12, सी, ई, फोलिक एसिड, अमीनो एसिड, विटामिन और मिनरल जैसे कई सारे पोषक तत्व मौजूद होते हैं। यह पोषक तत्व शरीर को कई तरह की बीमारियों से दूर रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा भी लाल एलोवेरा सेहत के लिए काफी गुणकारी माना जाता है। तो चलिए आपको बताते हैं इसे खाने के फायदे...

हार्ट को रखता है हैल्दी

लाल एलोवेरा में विटामिन–ए, बी12, सी, ई जैसे कई सारे पोषक तत्व मौजूद होते हैं यह पोषक तत्व शरीर में ब्लड प्रेशर कंट्रोल करने और हार्ट को हैल्दी बनाए रखने में सहायता करते हैं। इसके अलावा यदि आप हार्ट को हैल्दी रखना चाहते हैं तो हफ्ते में कम से कम 2–3 बार इससे तैयार जूस का सेवन करें। समस्या से काफी आराम मिलेगा।

कंट्रोल करेगा ब्लड शुगर

इसका सेवन करने से ब्लड शुगर भी कंट्रोल में रहती है। लाल एलोवेरा में पाया जाने वाला इमोडीन शरीर में ग्लूकोज का स्तर कम करने में मदद करता है इससे इंसुलिन भी बूस्ट होता है। डायबिटीज के रोगियों को एक्सपर्ट्स हफ्ते में दो बार लाल एलोवेरा जूस का सेवन करने की सलाह देते हैं।

दर्दों से मिलेगा आराम

लाल एलोवेरा को एक नेचुरल पेनकिलर भी कहते हैं। यह शरीर के दर्द, सिरदर्द, माइग्रेन से राहत दिलवाने में भी मदद करता है। इसके अलावा यह मांसपेशियों को आराम देकर दर्द से राहत दिलवाने के लिए भी काफी फायदेमंद माना जाता है।

इम्यूनिटी होगी मजबूत

यह रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करने में भी मदद करता है। इसका सेवन करने से बैक्टीरिया और इंफेक्शन से बचाव रहता है इसके अलावा लाल एलोवेरा खाने से मौसमी बीमारियां जैसे सर्दी, जुकाम, बुखार से भी बचाव रहता है।

पीरियड्स पेन से मिलेगी राहत

अनियमित पीरियड्स या फिर यदि पीरियड्स के दौरान बहुत दर्द हो तो उसके लिए भी आप लाल एलोवेरा जेल का सेवन कर सकते हैं। यह सूजन कम करने, कब्ज से राहत दिलवाने में भी मदद करता है। इसके अलावा पीरियड्स के दौरान होने वाली ऐंठन दूर करने के लिए भी लाल एलोवेरा जेल बेहद लाभकारी मानी जाती है।

नोट– यदि आपको किडनी या फिर पाचन से जुड़ी समस्याएं हैं तो एक बार डॉक्टर से पूछकर ही इसका सेवन करें।

बच्चों को बनाना है केयरिंग तो पेरेंट्स बचपन से ही करें इन बातों पर गौर

छोटे बच्चे प्यार के भूखे होते हैं उन्हें जहां भी प्यार मिले वो वहां पर अपना दिल लगा लेते हैं। इसके अलावा बच्चे अपने माता–पिता के भी काफी क्लोज होते हैं। हर माता–पिता यही चाहते हैं कि उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा और अच्छे जीवन मिले। ऐसे में पेरेंट्स को बचपन से ही बच्चों को अच्छी आदतें सिखानी होगी। अगर आप चाहते हैं कि आपके बच्चे हर किसी की बड़े होकर केयर करें तो आप उन्हें बचपन से ही यह चीजें सिखाना शुरु कर दें। तो चलिए आपको बताते हैं ऐसी कौन सी आदतें हैं जो आपको बचपन से ही बच्चों को सिखानी चाहिए...

सिखाएं मदद करना

बच्चों के लिए सबसे पहले रोल मॉडल उसके पेरेंट्स ही होते हैं ऐसे में यदि आप उन्हें कोई भी चीज सिखाएंगे तो वह आसानी से सिख लेंगे। उन्हें सिखाएं कि घर के हर सदस्य का ख्याल रखें, अपने आस–पास के लोगों की मदद करें। जरुरतमंद व्यक्तियों की सहायता करें। किसी अंजान व्यक्ति की सहायता करें इससे बच्चे हर किसी का ख्याल रखना सिखेंगे और उनके मन में हर किसी के लिए एक अच्छी देखभाल का भाव भी उत्पन्न होगा।

खुद भी करें चीजों को फॉलो

बच्चों के सामने यदि आप भी किसी की मदद, जानवरों और पेड़–पौधों का सम्मान करते हैं तो इससे बच्चे भी अपने आस–पास की चीजों को लेकर रिस्पॉन्सिबल होंगे। इसके अलावा वह बिना हिचकिचाए हुए आसानी से सभी की मदद कर पाएंगे। आप चाहें तो उन्हें किसी संस्था से भी जोड़ सकते हैं। संस्था के साथ जुड़के नेक काम करके बच्चे नई–नई चीजों को एक्सपलोर कर पाएंगे।

छोटे–छोटे काम करने के लिए करें प्रेरित

इसके अलावा आप बच्चों को जैसे की घर में मौजूद सदस्य दादी–दादा की देखभाल करने की जिम्मेदारी भी दे सकते हैं। इसके अलावा यदि उनका कोई छोटा भाई या बहन है तो उसे स्कूल साथ में ले जाने के लिए कहें । उन्हें इस बात का एहसास दिलवाएं कि घर के सदस्यों की अच्छे से केयर करें उनका फर्ज है। इससे वह अपना काम और भी अच्छे से कर पाएंगे। इसके अलावा यदि आपका बच्चा हर समय घर में अकेला रहता है तो आप उसे कोई पेट भी खरीद कर दे सकते हैं।

गलती करने पर माफी मांगना बताएं

बच्चों को यह भी जरुर सिखाएं कि यदि उनसे कोई गलती होती है तो वह इस पर माफी जरुर मांगे। कई बार पेरेंट्स बच्चों की गलतियां हंसी–हंसी में नजरअंदाज कर देते हैं लेकिन इससे बच्चे आगे चलकर और भी बदतमीज बन सकते हैं। ऐसे में उन्हें यह आदत जरुर सिखाएं कि यदि उनसे गलती हुई है तो वो सामने वाले से माफी भी जरुर मांगें।

दूसरों के प्रति सहानुभूति

बच्चों को सिखाएं कि दूसरों के प्रति उसे सहानुभूति रखनी चाहिए। आप चाहें तो उनके सामने किसी दोस्त के ऊपर चर्चा कर सकते हैं। जैसे यदि उनका दोस्त हर समय उदास रहता है तो आप उससे पूछें कि उनका दोस्त किस बात पर नाराज है। इससे बच्चे दूसरे की परेशानियां समझना सिखेंगे और उनके प्रति सहानुभूति भी दिखाएंगे।

संक्षिप्त

लाल निशान पर बंद हुआ शेयर बाजारय सेंसेक्स 829 अंक टूटा, निफ्टी 23700 के नीचे

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय शेयर बाजार गुरुवार को गिरावट के साथ बंद हुआ। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 829.29 अंक गिरकर 76,034.42 अंक पर बंद हुआ। वहीं, एनएसई निफ्टी 227.70 अंक गिरकर 23,639.15 अंक पर बंद हुआ। भारतीय शेयर बाजार गुरुवार को लाल निशान पर बंद हुआ। बेंचमार्क सेंसेक्स और निफ्टी में करीब एक प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 829.29 अंक या 1.08 प्रतिशत गिरकर 76,034.42 पर बंद हुआ। 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 227.70 अंक या 0.95 प्रतिशत गिरकर 23,639.15 पर बंद हुआ। जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के मुख्य निवेश रणनीतिकार वीके विजयकुमार ने कहा कि बाहरी प्रतिकूल परिस्थितियों ने बाजार को कमजोर क्षेत्र में धकेल दिया है। युद्ध के जारी रहने और थमने के कोई संकेत न दिखने के साथ–साथ ब्रेंट क्रूड के एक बार फिर 100 डॉलर के स्तर पर पहुंचने से यह कमजोरी बनी रहने की संभावना है। उन्होंने कहा कि भले ही डीआईआई लगातार बाजार में खरीदारी कर रहे हैं, लेकिन डीआईआई की खरीदारी बाजार को उबरने में मदद नहीं कर रही है क्योंकि एफआईआई लगातार बिकवाली कर रहे हैं और इस अनिश्चित वैश्विक माहौल में अपनी रणनीति बदलने के कोई संकेत नहीं दिखा रहे हैं। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में तेज उछाल देखने को मिला है। आज सुबह वैश्विक मानक ब्रेंट क्रूड की कीमत 100 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गई। इससे कुछ दिन पहले ही यह कीमत करीब 120 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंचने के करीब पहुंच गई थी, जिससे वैश्विक वित्तीय बाजारों और अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ गया है। तेल की कीमतों में 9प्रतिशत से ज्यादा की तेजी तब आई जब हॉर्मुज जलडमरूमध्य के आसपास व्यावसायिक जहाजों पर ईरान के हमलों के बाद आपूर्ति को लेकर चिंता बढ़ गई। वहीं अमेरिकी मानक डब्ल्यूटीआई क्रूड भी उछलकर करीब 95 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गया।

पश्चिम एशिया में तनाव के बावजूद सात प्रतिशत की दर से बढ़ेगी भारत की अर्थव्यवस्था, रिपोर्ट में दावा

नई दिल्ली,एजेंसी। दिग्गज जापानी निवेश बैंक नोमुरा ने कहा है कि पश्चिम एशिया में जारी भू–राजनीतिक तनाव के बावजूद वित्त वर्ष 2026–27 में भारत की अर्थव्यवस्था करीब सात प्रतिशत की दर से बढ़ सकती है। हालांकि बैंक ने चेतावनी दी है कि क्षेत्रीय संघर्ष भारत के तथाकथित गोल्डीलॉक्स आर्थिक दौर के लिए एक बड़ी परीक्षा साबित हो सकता है। नोमुरा की भारत और एशिया (जापान को छोड़कर) की मुख्य अर्थशास्त्री सोनल वर्मा और अर्थशास्त्री ऑरोदीप नंदी की रिपोर्ट के अनुसार, अगर पश्चिम एशिया में तनाव लंबे समय तक बना रहता है तो ऊर्जा कीमतों और आपूर्ति पर दबाव बढ़ सकता है, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था प्रभावित हो सकती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2027 के लिए चालू खाता घाटा के अनुमान को 0.4 प्रतिशत बढ़ाकर जीडीपी के 1.6 प्रतिशत तक किया गया है। वहीं उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई का अनुमान 0.7 प्रतिशत बढ़ाकर 4.5 प्रतिशत कर दिया गया है। इसके साथ ही जीडीपी वृद्धि अनुमान में मामूली कटौती करते हुए इसे 7.1 प्रतिशत से घटाकर 7.0 प्रतिशत कर दिया गया है। नोमुरा के अनुसार, 2026 की पहली तिमाही के शुरुआती आंकड़े बताते हैं कि भारत में निजी उपभोग और औद्योगिक गतिविधियों में गति बनी हुई है। हालांकि निर्यात और सरकारी खर्च अपेक्षाकृत कमजोर रहने की संभावना है। पश्चिम एशिया में बढ़ते भू–राजनीतिक तनाव के कारण ऊर्जा आपूर्ति, विशेषकर प्राकृतिक गैस की कमी, घरेलू उद्योग और सेवा क्षेत्र की गतिविधियों को प्रभावित कर सकती है। इसके बावजूद रिपोर्ट में कहा गया है कि पहले किए गए नीतिगत कदमों में ढील, संरचनात्मक सुधार, वेतन वृद्धि और अमेरिका के साथ व्यापार तनाव में कमी जैसे कारक भारत में चक्रीय आर्थिक सुधार को समर्थन दे सकते हैं। नोमुरा ने यह भी कहा कि ऊर्जा कीमतों में बढ़ोतरी से एशिया की कई अर्थव्यवस्थाओं में महंगाई पर दबाव बढ़ सकता है, जो फिलहाल अपेक्षाकृत निम्न स्तर पर है। ब्याज दरों के मोर्चे पर निवेश बैंक का मानना है कि अमेरिका–ईरान तनाव के चलते कई केंद्रीय बैंक फिलहाल नीतिगत दरों को स्थिर रख सकते हैं। हालांकि ऊर्जा कीमतों में तेज बढ़ोतरी की स्थिति में भविष्य में ब्याज दरें बढ़ाने की संभावना भी बन सकती है।

2012 में बीसीसीआई ने ऐसा क्या कहा कि चौंक गए थे तेंदुलकर? इसके कुछ समय बाद ही ले लिया था संन्यास

मुंबइ,एजेंसी। भारतीय क्रिकेट के महान बल्लेबाज और क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर के करियर का एक ऐसा दौर भी आया जब चयनकर्ताओं ने उनके भविष्य पर गंभीर चर्चा की। साल 2011 में विश्व कप जीतने के बाद सचिन का प्रदर्शन पहले जैसा नहीं रहा और 2012 में उनकी फॉर्म को लेकर सवाल उठने लगे थे। ऐसे में चयनकर्ताओं ने सचिन से बात की थी और कुछ ऐसा कहा था कि सचिन चौंक गए थे। इसके कुछ समय बाद ही उन्होंने पहले वनडे और फिर टेस्ट से संन्यास का एलान कर दिया था।

सचिन ने वनडे विश्वकप 2011 के बाद इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया दौरे पर खेले गए आठ टेस्ट मैचों में 560 रन बनाए, जिसमें चार अर्धशतक शामिल थे। हालांकि, भारत को दोनों ही सीरीज में 0–4 से हार का सामना करना पड़ा। इसी दौरान उनके 100वें अंतरराष्ट्रीय शतक का दबाव भी लगातार बढ़ता जा रहा था। इस दौर में भारतीय टीम के कई सीनियर खिलाड़ी भी संन्यास ले चुके थे। सौरव गांगुली, वीवीएस लक्ष्मण और राहुल द्रविड़ जैसे दिग्गज खिलाड़ी पहले ही क्रिकेट को अलविदा कह चुके थे। ऐसे में यह चर्चा तेज हो गई थी कि अगला नंबर सचिन तेंदुलकर का हो सकता है। उम्र भी 39 साल हो चुकी थी और टीम में नए खिलाड़ियों को मौका देने की बात उठने लगी थी।

तत्कालीन चयन समिति के अध्यक्ष संदीप पाटिल ने एक इंटरव्यू में उस दौर का खुलासा किया। उन्होंने बताया कि 2012 में नागपुर टेस्ट के बाद सचिन से खास मुलाकात की गई थी। पाटिल ने कहा, मुझे याद है 2012 में नागपुर टेस्ट के आखिरी दिन हम सचिन से मिलने गए थे। मैंने उनसे पूछा– आगे की क्या योजना है? चयन समिति को लगा था कि अब हमें उनके रिप्लेसमेंट के बारे में सोचना चाहिए। जब पाटिल ने सचिन से उनके संभावित रिप्लेसमेंट की बात की तो मास्टर ब्लास्टर हैरान रह गए। पाटिल ने बताया, वह यह

सुनकर चौंक गए। उन्होंने पूछा– क्यों? फिर मैंने कहा कि चयन समिति को लगता है कि अब हमें आपके रिप्लेसमेंट के बारे में सोचना चाहिए। बाद में उन्होंने मुझे फोन किया और पूछा– क्या आप सच में ऐसा कह रहे हैं? पाटिल ने आगे कहा कि देशभर में इस फैसले को लेकर उनकी आलोचना हुई, लेकिन सचिन को टीम से कभी बाहर नहीं किया गया।

पाटिल के मुताबिक, उस बातचीत के तुरंत बाद सचिन ने साफ कहा था कि वह अभी क्रिकेट जारी रखना चाहते हैं। उन्होंने बताया, श्उन्होंने मुझसे कहा– मैं खेलना जारी रखना चाहता हूं। लेकिन एक हफ्ते के भीतर ही उन्होंने वनडे क्रिकेट से संन्यास लेने का फैसला कर लिया। सचिन ने पाकिस्तान के खिलाफ दिसंबर 2012 में वनडे सीरीज शुरू होने से ठीक पहले अंतरराष्ट्रीय वनडे क्रिकेट को अलविदा कह दिया था। हालांकि, उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में एक साल और खेला। 2013 में भारत ने बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया को 4–0 से हराया, लेकिन उस सीरीज में सचिन का प्रदर्शन पहले जैसा नहीं रहा। इसके बाद उन्होंने आईपीएल से भी संन्यास लिया और फिर घरेलू मैदान पर वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज के साथ अपने 24 साल लंबे अंतरराष्ट्रीय करियर को अलविदा कहा। सचिन तेंदुलकर ने अपने करियर में 34,000 से ज्यादा अंतरराष्ट्रीय रन बनाए और टेस्ट क्रिकेट में 200 मैच खेलने वाले दुनिया के पहले खिलाड़ी बने।

सचिन–अश्विन की इस मामले में करेंगे बराबरी, द्रविड़ को भी सम्मान

मुंबई,एजेंसी। भारतीय टेस्ट और वनडे टीम के कप्तान शुभमन गिल को साल 2025 के लिए बीसीसीआई के प्रतिष्ठित क्रिकेटर ऑफ द ईयर पुरस्कार से सम्मानित किया जा सकता है। क्रिकेटर ऑफ द ईयर पुरस्कार को पॉली उमरीगर क्रिकेट ऑफ द ईयर अवॉर्ड भी कहा जाता है। वहीं, राहुल द्रविड़ भी लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से नवाजे जा सकते हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड का वार्षिक सम्मान समारोह नमन 15 मार्च को नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इस समारोह में कई खिलाड़ियों और क्रिकेट हस्तियों को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया जाएगा। शुभमन दूसरी बार यह पुरस्कार जीतेंगे। इससे पहले साल 2023 में भी उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। दूसरी बार यह अवॉर्ड जीतने के साथ ही शुभमन सचिन तेंदुलकर और रविचंद्रन अश्विन की बराबरी कर लेंगे। इन दोनों ने भी यह अवॉर्ड दो–दो बार जीता था। इन तीनों से ज्यादा बार इस अवॉर्ड से विराट कोहली और जसप्रीत बुमराह ही सम्मानित हुए हैं।

कोहली पांच बार बीसीसीआई के साल के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर रहे हैं, वहीं बुमराह ने तीन बार यह अवॉर्ड जीता है। 26 वर्षीय शुभमन ने पिछले साल यानी 2025 टेस्ट और वनडे क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन किया। हालांकि, उन्हें हाल ही में टी20 विश्व कप जीतने वाली भारतीय टीम में जगह नहीं मिली थी, लेकिन बाकी दो फॉर्मेट में उनका प्रदर्शन बेहद दमदार रहा। शुभमन ने 2025 में टेस्ट क्रिकेट में शानदार बल्लेबाजी करते हुए 983 रन बनाए। इसमें इंग्लैंड के खिलाफ उसकी सरजमीं पर खेली गई सीरीज में 754 रन शामिल रहे, जो उनकी बेहतरीन फॉर्म को दर्शाता है। इंग्लैंड से टेस्ट सीरीज में उनका औसत 70 से अधिक रहा और उन्होंने कई महत्वपूर्ण पारियां खेलीं।

वनडे क्रिकेट में भी गिल ने अच्छा प्रदर्शन किया। उन्होंने कुल 490 रन बनाए, जिसमें भारत की चौंपियंस ट्रॉफी जीतने वाली मुहिम में बनाए गए 188 रन भी शामिल हैं। अगर सभी फॉर्मेट को मिलाकर देखा जाए तो गिल ने पिछले साल कुल 1,764 रन बनाए, जिनमें सात शतक और तीन अर्धशतक शामिल रहे। उनका औसत करीब 49 का रहा। इसके अलावा आईपीएल में भी गिल का बल्ला खूब चला। गुजरात टाइटंस के लिए खेलते हुए और टीम की कप्तानी करते हुए उन्होंने 650 रन बनाए और लगभग 50 के औसत से बल्लेबाजी की।

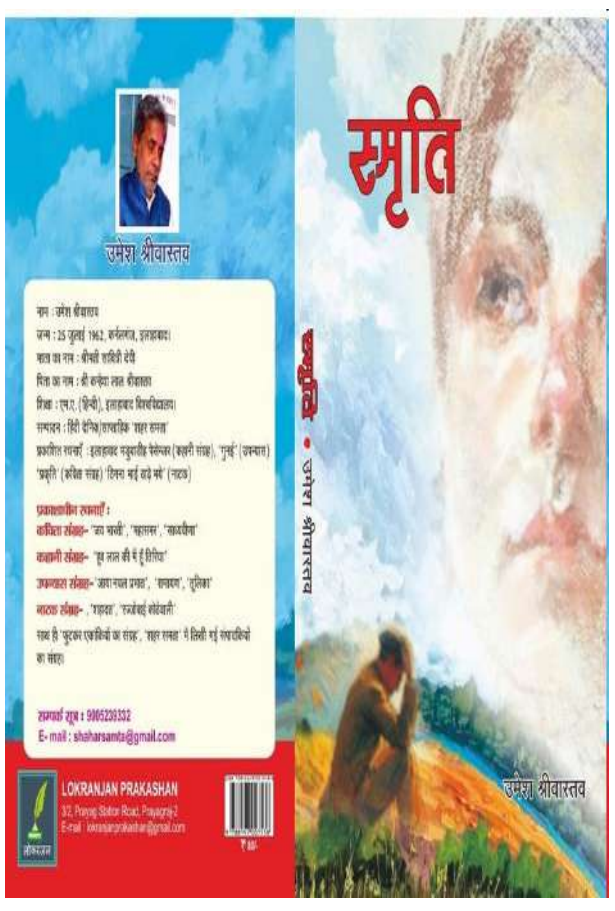

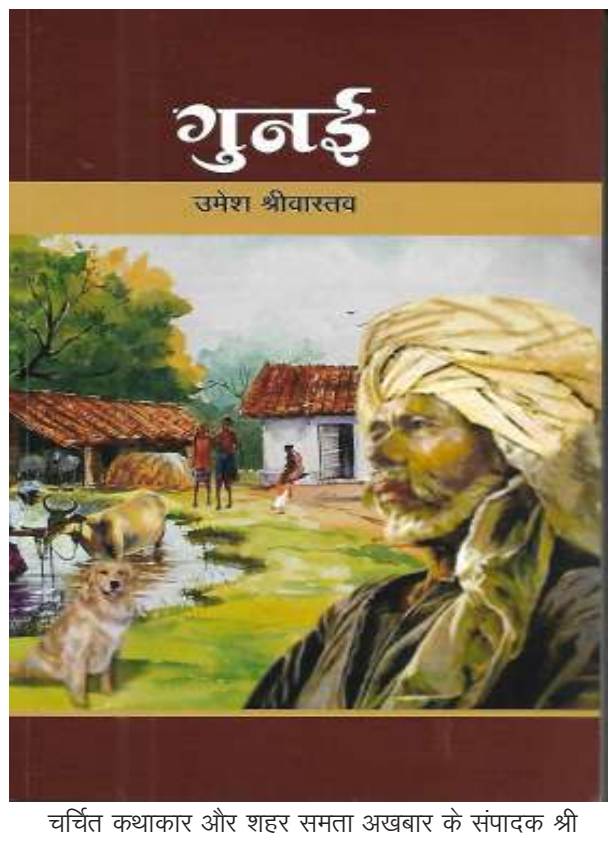

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

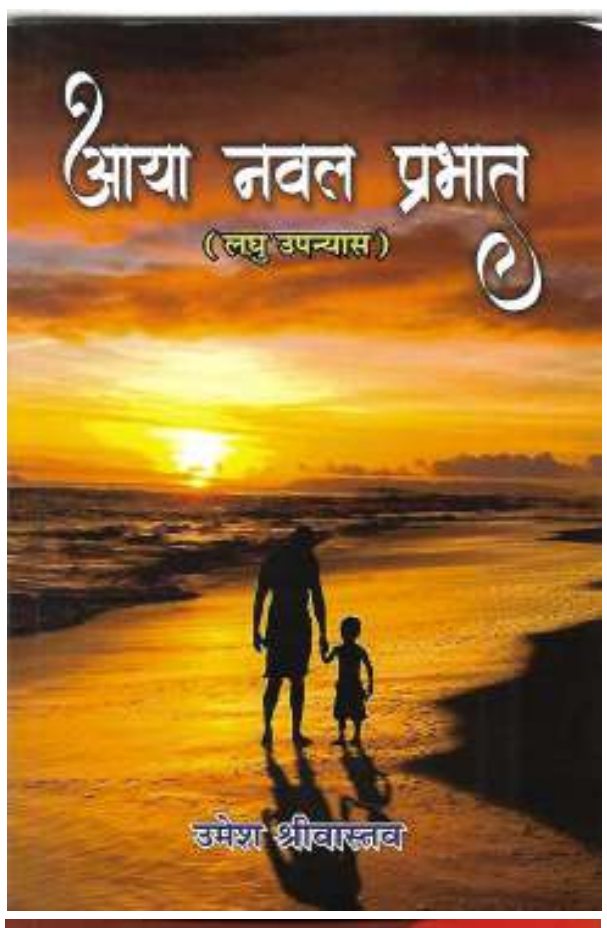

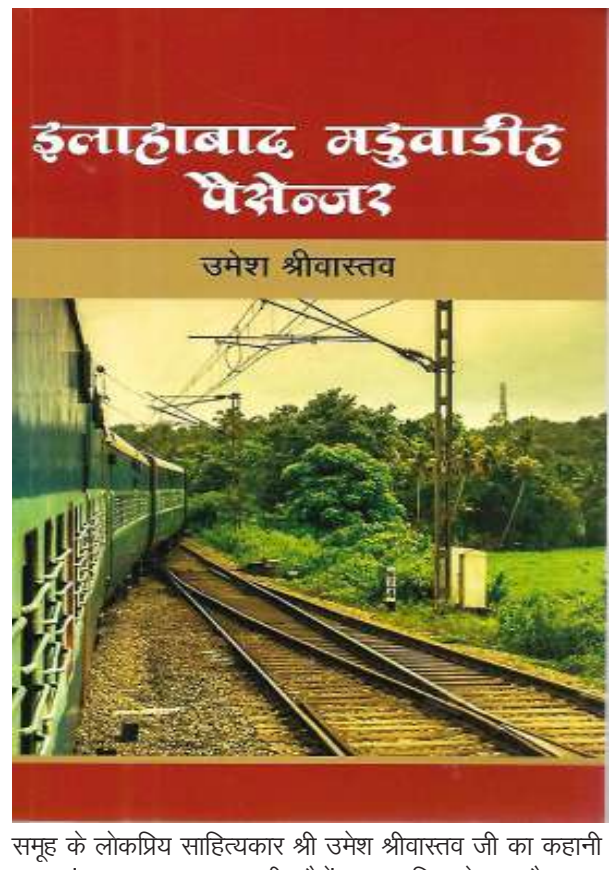

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

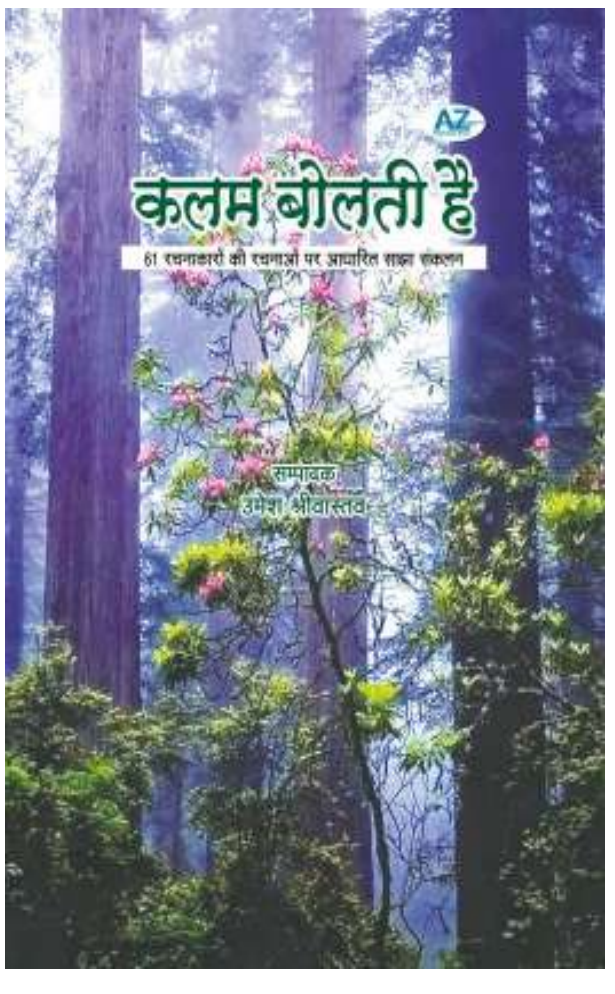

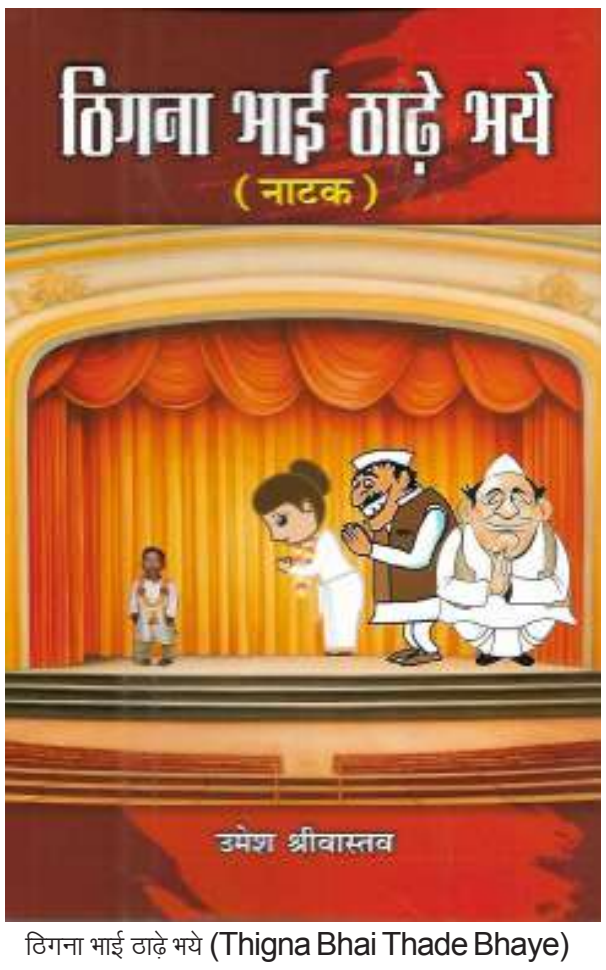

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

अमेरिका सांसदों ईरान मे लड़कियों के स्कूल पर हमले का किया विरोध, 7 से 12 साल की बच्चियों की हुई मौत

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में ईरान पर हमले के विरोध में कई सीनेटरों ने पेंटागन को पत्र लिखकर जवाब मांगा है। 40 से अधिक यूएस सिनेटरों ने पेंटागन को पत्र लिखकर ईरान में लड़कियों के एक स्कूल पर हुए बम धमाके का विरोध किया है। इस धमाके में कथित तौर पर 168 लोग मारे गए थे। 28 फरवरी जब अमेरिका और इस्राइल पर हमला शुरू किया तब इस गोलाबारी में ईरान में लड़कियों के एक प्रथमिक विद्यालय मिनाब पर एयरस्ट्राइक हुई। इस हमले में ज्यादातक बच्चों का मौत हुई। सांसदों द्वारा रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ को लिखे पत्र में 28 फरवरी को बच्चों के एक स्कूल पर की गई एयरस्ट्राइक को लेकर चिंता जताई गई है। साथ ही पेंटागन से इस पर जवाब मांगा है। इस पत्र को लिखने वाले समूह में सीनेटर क्रिस वैन होलेन, टिम केन, एलिजाबेथ वॉरेन और ब्रायन शैट्ज प्रमुख है। इसे सीनेट डेमोक्रेटिक लीडर चक शूमर के साथ–साथ 40 से ज्यादा दूसरे सांसदों का समर्थन मिला है। सीनेटरों ने पत्र में बताया कि ईरान के खिलाफ जंग बिना कांग्रेस की मंजूरी के शुरू की गई है। साथ ही यह भी कहा गया कि अमेरिका और इस्राइल दोनों के जंग के दौरान अमेरिका और अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन करना चाहिए। हमलों में मारे गए लोगों में ज्यादातर 7 से 12 साल की लड़कियां थीं सीनटेरों ने कहा स्कूल पर हुए हमलों और आम लोगों को नुकसान पहुंचाने वाली किसी भी दूसरी अमेरिकी मिलिट्री कार्रवाई की तुरंत जांच होनी चाहिए, और नतीजों को जल्द से जल्द सार्वजनिक किया जाना चाहिए, साथ ही जवाबदेही तय करने के लिए भी कदम उठाए जाने चाहिए। हेगसेथ ने बताया कि अमेरिका इ हमले को रिव्यू कर रहा है। मिनाब हमले के अलावा, सीनेटरों ने लड़ाई में आम लोगों के ज्यादा हताहत होने पर भी चिंता जताई। उन्होंने लिखा ऐसी भी खबरें हैं कि हवाई हमलों में कई हॉस्पिटल, सांस्कृतिक हेरिटेज साइट्स और दूसरे जरूरी सड़क, वहन, ब्रिज को भी निशाना बनाया गया है। ईरान के बड़े शहरों और आबादी वाले इलाकों में विस्फोटक हथियारों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इसमें राजधानी तेहरान भी शामिल है, जहां लगभग 9 मिलियन लोग रहते हैं। सीनेटरों ने अमेरिका की मानवाधिकार कार्यकर्ता समाचार एजेंसी का हवाला देते हुए बताया कि 10 मार्च तक, लड़ाई में 1,245 से ज्यादा आम लोग मारे गए थे और 12,000 से ज्यादा घायल हुए थे। ईरान में जिस स्कूल पर हमला किया गया है वह एक ईरान के नेवल बेस के पास था। सांसदों ने पेंटागन से यह साफ करने को कहा कि क्या अमेरिका सुरक्षा बलों ने स्कूल पर हमला किया था और अगर किया था, तो टारगेट क्या था, बिल्डिंग की पहचान करने के लिए क्या विषलेषण किया गया था, और आम लोगों की मौत को कम करने के लिए क्या कदम उठाए गए थे। उन्होंने यह भी सवाल किया कि क्या हमलों की प्लानिंग करने या उन्हें अंजाम देने में एआई टूल्स का इस्तेमाल किया गया था और एआई से बने टारगेट को सत्यापित करने के लिए क्या सेफगार्ड थे।

संक्षिप्त

इराक में हुए हमले में भारतीय की मौत, ईरानी सुसाइड बोट से टक्कर के बाद अमेरिकी तेल टैंकर में लगी आग

एजेंसी/ इराक के खोर अल जुबैर बंदरगाह के पास बुधवार को एक अमेरिकी तेल टैंकर पर बड़ा हमला हुआ। इस हमले में एक भारतीय नागरिक की जान चली गई है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, ईरान की एक सुसाइड बोट ने

इस टैंकर को निशाना बनाया। यह घटना इराक की समुद्री सीमा के अंदर हुई। जिस जहाज पर हमला हुआ, उसका नाम श्सेफसी विष्णुश है। यह अमेरिका का जहाज है और इस पर मार्शल आइलैंड्स का झंडा लगा है। हमले के समय जहाज पर कुल 28 लोग मौजूद थे। इनमें से एक भारतीय की मौत हो गई, जबकि बाकी 27 कर्मियों को सुरक्षित बचा लिया गया है। बचाए गए सभी लोगों को इराक के बसरा शहर ले जाया गया है। जहाज की कंपनी श्सेफसीश ने इस घटना पर गहरा दुख जताया है। कंपनी ने भारत सरकार से अपील की है कि वह इस हमले की कड़ी निंदा करे। उन्होंने पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच समुद्र में काम करने वाले लोगों की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाने की मांग की है। सूत्रों का कहना है कि दुनिया भर के जहाजों पर काम करने वाले नाविकों में 15 प्रतिशत से ज्यादा भारतीय हैं। ऐसे में किसी भी देश के जहाज पर हमला होने से भारतीयों की जान को सबसे ज्यादा खतरा रहता है। सेफसी विष्णुश कच्चा तेल ढोने वाला एक बड़ा टैंकर है। यह जहाज साल 2007 में बना था। इसकी लंबाई लगभग 228 मीटर और चौड़ाई 32 मीटर है। फिलहाल इस हमले के बाद क्षेत्र में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है।

ट्रंप की ईरान को धमकी, कहा– अमेरिकी मांगों को नहीं माना तो नए सुप्रीम लीडर का होगा खात्मा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के नए सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई को लेकर बड़ा बयान दिया है। श्वॉल स्ट्रीट जर्नलश की एक रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रंप ने कहा है कि अगर मुजतबा अमेरिकी मांगों को

नहीं मानते, तो वह उनकी हत्या का समर्थन करेंगे। अमेरिका की मांग यह है कि ईरान अपना परमाणु हथियार कार्यक्रम पूरी तरह बंद कर दे। अगर मुजतबा ने इससे इनकार किया, तो ट्रंप नए लीडर को खत्म करने के लिए तैयार हैं। अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि इस काम को इस्राइली सेना अंजाम दे सकती है। यह ठीक वैसा ही होगा जैसा 28 फरवरी को मुजतबा के पिता अली खामेनेई के साथ हुआ था। ट्रंप ने फॉक्स न्यूज को दिए इंटरव्यू में कहा कि वह ईरान के इस चुनाव से बिल्कुल खुश नहीं हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि मुजतबा खामेनेई अब शांति से नहीं रह पाएंगे। ट्रंप का मानना है कि ईरान के अगले नेता को चुनने में अमेरिका की भी राय होनी चाहिए। उन्होंने इसकी तुलना वेनेजुएला में अमेरिकी दखल से की। श्न्यूयॉर्क पोस्टश की रिपोर्ट के अनुसार, दिवंगत नेता अली खामेनेई ने अपनी वसीयत में साफ लिखा था कि उनका बेटा उनका उत्तराधिकारी न बने। इसके बावजूद, ईरान की ताकतवर सेना (आईआरजीसी) ने मुजतबा को इस पद पर बैठा दिया। जानकारों का कहना है कि खुद अली खामेनेई को अपने बेटे की काबिलियत पर शक था। 56 साल के मुजतबा ने इस पद से पहले कभी किसी सरकारी ओहदे पर काम नहीं किया। वह हमेशा अपने पिता के करीबी घेरे में रहकर पर्दे के पीछे से सत्ता चलाते थे। अमेरिकी दस्तावेजों में उन्हें पर्दे के पीछे की असली ताकत बताया गया है। उन पर पहले भी चुनावों में धांधली करने के आरोप लग चुके हैं। इस्राइली सेना ने भी साफ कर दिया है कि जो भी ईरानी नेता आतंकवाद को बढ़ावा देगा, वह उनके निशाने पर रहेगा।

'होर्मुज में ईरान की नौसेना पर अमेरिका का वार जारी', ट्रंप बोले- 58 जहाज और बारूदी नावों को किया नष्ट

वॉशिंगटन, एजेंसी। पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के बीच होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर तनाव लगातार बढ़ता जा रहा है। इसी बीच मौजूदा अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि अमेरिकी सेना ने ईरान की नौसैनिक ताकत पर बड़ा हमला किया है। ट्रंप ने कहा कि अमेरिकी कार्रवाई में ईरान के कई जहाज और बारूदी सुरंग बिछाने वाली नावों को नष्ट कर दिया गया है। उनका कहना है कि यह कदम वैश्विक समुद्री व्यापार और तेल आपूर्ति की सुरक्षा के लिए उठाया गया है। ट्रंप ने कहा कि अमेरिका ने ईरान के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत निर्णायक सैन्य कार्रवाई की है।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर. 9190052 39332
.919450482227

ईरान का ओमान पर बड़ा हमला: सलालाह पोर्ट पर ड्रोन से तेल टैंकरों को बनाया निशाना, खाड़ी देशों में बढ़ा तनाव

मस्कट, एजेंसी। खाड़ी क्षेत्र में तनाव लगातार बढ़ता जा रहा है। अमेरिका और इस्राइल के साथ चल रहे युद्ध के बीच ईरान ने अब ओमान के सलालाह बंदरगाह पर ड्रोन से हमला किया है। इस हमले में तेल के स्टोरेज टैंकों को निशाना बनाया गया है। इस घटना ने क्षेत्र में एक नया संकट पैदा कर दिया है, क्योंकि ओमान अब तक इस युद्ध में एक तटस्थ देश की भूमिका निभा रहा था। अल जजीरा और ओमान टीवी की रिपोर्ट के अनुसार, ड्रोन हमलों ने सलालाह बंदरगाह पर स्थित तेल टैंकों को काफी नुकसान पहुंचाया है। ब्रिटेन की समुद्री सुरक्षा कंपनी एम्ब्रे ने भी इस हमले की पुष्टि की है। हालांकि राहत की बात यह है कि इस हमले में किसी भी व्यापारिक जहाज को नुकसान नहीं पहुंचा है। यह हमला ईरान द्वारा खाड़ी देशों के ऊर्जा ठिकानों पर किए जा रहे हमलों का हिस्सा माना जा रहा है। इस हमले के बाद ओमान के सुल्तान हैथम बिन तारिक अल सैद ने ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान से संपर्क किया। सुल्तान ने ओमान की धरती पर हुए इन हमलों पर कड़ा विरोध दर्ज कराया और इसकी निंदा की। उन्होंने साफ किया कि ओमान युद्ध में किसी का पक्ष नहीं ले रहा है। सुल्तान ने कहा कि ओमान अपनी सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखने के लिए हर जरूरी कदम उठाएगा। बता दें कि यह हमला उस समय हुआ जब सुल्तान हैथम ने अयातुल्ला मोजतबा खामेनेई को ईरान का नया सर्वोच्च नेता बनने पर बधाई दी थी। ओमान की न्यूज एजेंसी के मुताबिक सुल्तान ने खामेनेई के चयन पर उन्हें शुभकामना संदेश भेजा था। ओमान लंबे समय से ईरान और अमेरिका के बीच मध्यस्थता करता रहा है। लेकिन पिछले 11 दिनों से जारी युद्ध के कारण अब यह कोशिशें कमजोर पड़ती दिख रही हैं। सिर्फ ओमान ही नहीं बल्कि हॉर्मुज जलडमरूमध्य के पास भी जहाजों को निशाना बनाया जा रहा है। यूके मैरीटाइम ट्रेड ऑपरेशंस सेंटर ने जानकारी दी है कि तीन व्यापारिक जहाजों पर अज्ञात चीजों से हमला किया गया है। इस इलाके में लगातार हो रहे हमलों ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार और समुद्री सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा पैदा कर दिया है। अमेरिका और इस्राइल की सैन्य कार्रवाई के जवाब में ईरान इन इलाकों में अपनी सक्रियता बढ़ा रहा है।

पश्चिम एशिया संकट: UNSC में उठी पड़ोसियों पर हमले रोकने की मांग, दुबई एयरपोर्ट-तेल ठिकानों पर निशाने चिंताजनक

दुबई, एजेंसी। ईरान ने बुधवार को दुनिया के सबसे व्यस्त दुबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट और व्यापारिक जहाजों को निशाना बनाया। यह हमला उस समय हुआ जब अमेरिका और इस्राइल तेहरान पर हमले कर रहे थे। संयुक्त राष्ट्र की सबसे ताकतवर संस्था, सुरक्षा परिषद ने एक प्रस्ताव पास किया है। इसमें ईरान से अपने पड़ोसी देशों पर हमले तुरंत रोकने की मांग की गई है। इन हमलों से दुनिया भर में तेल की सप्लाई को बड़ा खतरा पैदा हो गया है। दबाव बनाना चाहता है ईरान ईरान इन हमलों के जरिए अमेरिका और इस्राइल पर दबाव बनाना चाहता है ताकि 12 दिन पहले शुरू हुआ युद्ध खत्म हो सके। पेंटागन के अनुसार, युद्ध के पहले हफ्ते में ही अमेरिका को 11.3 अरब डॉलर का नुकसान हुआ है। सेना ने बताया कि युद्ध के पहले वीकेंड में अकेले हथियारों पर पांच अरब डॉलर खर्च हो गए। ईरान ने खाड़ी देशों के तेल क्षेत्रों और रिफाइनरियों को निशाना बनाया है। उसने होर्मुज की खाड़ी से होने वाले व्यापार को भी रोक दिया है, जहां से दुनिया का 20 प्रतिशत तेल गुजरता है। इस संकट से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने अपने बड़ा फैसला लिया है। वह बाजार में 40 करोड़ बैरल तेल उतारेगी। अमेरिका भी अगले हफ्ते अपने सुरक्षित भंडार से 17.2 करोड़ बैरल तेल जारी करेगा। संयुक्त राष्ट्र ने ईरान से हमले रोकने की मांग की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने बुधवार को एक प्रस्ताव पारित किया। इसमें ईरान से खाड़ी पड़ोसियों पर अत्यधिक हमलों को रोकने की मांग की गई है। हाल के हमलों में, संयुक्त अरब अमीरात में दुबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास दो ईरानी ड्रोन हमलों में चार लोग घायल हुए। हालांकि, उड़ानें जारी रहीं। दुबई मीडिया कार्यालय ने यह जानकारी दी। गुरुवार की सुबह दुबई क्रीक हार्बर में एक लक्जरी अपार्टमेंट टॉवर में आग लग गई। बहरीन के आंतरिक मंत्रालय ने कहा कि ईरानी–लिंक्ड हमलों ने मुहर्रक प्रांत में ईंधन टैंकों को निशाना बनाया। ओमान के सलालाह बंदरगाह पर भी ईंधन भंडारण टैंकों में आग लगी। खाड़ी देशों और इराक में हमले बहरीन के संयुक्त राष्ट्र राजदूत जमाल अलरोवाई ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय इन ईरानी हमलों को दृढ़ता से खारिज करता है। ये हमले संप्रभु देशों के खिलाफ हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था, ऊर्जा और व्यापार के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र में स्थिरता को खतरे में डालते हैं। संयुक्त राष्ट्र के सबसे शक्तिशाली निकाय में 13–0 के वोट से ईरान की अलग–थलग स्थिति झलकती है। चीन और रूस ने मतदान से परहेज किया। उन्होंने प्रस्ताव को अत्यंत असंतुलित बताया। इस बीच, खाड़ी देशों में और हमलों की सूचना मिली। इराक के कुर्दिस्तान क्षेत्र में इरबिल और सुलेमानिया शहरों की ओर ड्रोन लॉन्च किए गए। इराक के दक्षिणी हिस्से में एक ऑस्ट्रेलियाई झंडे वाले तेल जहाज पर हमला हुआ। जहाज के 25 चालक दल को बचा लिया गया। इस्रायल और लेबनान में संघर्ष गुरुवार को यरूशलम और इस्रायल के अन्य हिस्सों में सायरन बजे और जोरदार धमाके सुनाई दिए। इस्रायली सेना ने कहा कि वह तेहरान में बड़े पैमाने पर हमलों की एक और लहर के साथ जवाब दे रही थी। इस्रायल ने लेबनान में ईरान समर्थित हिजबुल्लाह आतंकवादियों से जुड़े ठिकानों पर भी हमला किया। बेरुत के रामलेट अल–बायदा में एक इस्रायली हमले में सात लोग मारे गए और 21 अन्य घायल हुए। वहीं ईरान में अब तक 1,300 से ज्यादा की मौत हुई है। बुधवार को बेरुत के दक्षिणी उपनगरों में धमाके हुए। इस्रायली सेना ने कहा कि ये हमले हिजबुल्लाह द्वारा उत्तरी इस्रायल पर दर्जनों रॉकेट दागने के जवाब में थे। लेबनान में इस नवीनतम लड़ाई के बाद से कम से कम 634 लोग मारे गए हैं, जबकि संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी एजेंसी के अनुसार, 759,000 लोग आंतरिक रूप से विस्थापित हुए हैं।

चीन में नए कानून पर मंथन: एक राष्ट्र–एक पहचान की तैयारी में ड्रैगन? अल्पसंख्यकों की भाषा नीति पर दिखेगा असर

बीजिंग, एजेंसी। चीन सरकार एक व्यापक श्जातीय एकताश कानून लाने की तैयारी में है, जिसे लेकर आलोचकों ने चिंता जताई है। उनका कहना है कि यह कानून अल्पसंख्यकों के अधिकारों को और कमजोर कर सकता है और उन्हें मुख्यधारा में जबरन समाहित करने की नीति को मजबूत करेगा। यह कानून देश की संसद द्वारा गुरुवार को मंजूरी मिलने की उम्मीद है। इसके तहत सभी जातीय समूहों के बीच श्समुदाय की मजबूत भावनाश को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा गया है। राष्ट्रीय जन कांग्रेस के प्रतिनिधि लू किनजियान ने कहा कि यह कानून श्चीनी राष्ट्रश के भीतर सभी जातीय समूहों के बीच एकता को बढ़ावा देगा। प्रस्तावित कानून के अनुसार, सभी सरकारी निकायों और निजी उद्यमों को जातीय एकता को बढ़ावा देना होगा। इसमें स्थानीय सरकारें और अखिल–चीन महिला महासंघ जैसे राज्य–संबद्ध समूह भी शामिल हैं। कानून में कहा गया है कि देश के प्रत्येक जातीय समूह के लोग, सभी संगठन, सशस्त्र बल, हर पार्टी, सामाजिक संगठन और हर कंपनी को कानून और संविधान के अनुसार श्चीनी राष्ट्रश की एक साझा चेतना बनानी होगी और इस चेतना के निर्माण की जिम्मेदारी लेनी होगी। अकादमिकों और पर्यवेक्षकों का मानना है कि यह नया प्रावधान जातीय अल्पसंख्यकों की पहचान के लिए एक झटका है, क्योंकि यह अनिवार्य शिक्षा में मंदारिन चीनी के उपयोग को अनिवार्य बनाता है। चीन की अधिकांश आबादी हान चीनी है और आधिकारिक भाषा मंदारिन है। देश में 55 जातीय समूह हैं, जो कुल आबादी का 8.9 प्रतिशत हैं। संविधान के अनुसार, श्प्रत्येक जातीय समूह को अपनी भाषा का उपयोग करने और उसे विकसित करने का अधिकार हैश और श्स्व–शासन का अधिकार हैश। क्षेत्रीय जातीय स्वायत्तता कानून इन समूहों को सीमित स्वायत्तता का वादा करता है, जिसमें अर्थव्यवस्था विकसित करने के लिए लचीले उपाय शामिल हैं। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि व्यवहार में नया कानून इन प्रावधानों पर हावी होगा। ऑस्ट्रेलिया के लाट्रोब विश्वविद्यालय में चीन की जातीय अल्पसंख्यक नीतियों पर अध्ययन करने वाले प्रोफेसर जेम्स लिबोल्ड ने कहा कि यह कानून पार्टी के श्सार्थक स्वायत्तताश के मूल वादे को समाप्त कर देगा। उन्होंने इस उपाय को चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की जातीय नीतियों में श्बड़े पुनर्मूल्यांकनश का एक प्रमुख हिस्सा बताया। नए कानून के अनुच्छेद 15 के अनुसार, किंडरगार्टन से लेकर हाई स्कूल तक की सभी अनिवार्य शिक्षा में मंदारिन चीनी को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाएगा। इनर मंगोलिया, तिब्बत और शिनजियांग जैसे चीनी क्षेत्रों में, जहां जातीय अल्पसंख्यकों की बड़ी आबादी है, मंदारिन पहले से ही शिक्षा का प्राथमिक माध्यम है। लेकिन नया कानून स्पष्ट रूप से कहता है कि देश भर में अल्पसंख्यक भाषाएं शिक्षा का प्राथमिक माध्यम नहीं हो सकतीं।

क्या थमने वाला है ईरान और –यूएस इस्राइल का संघर्ष? राष्ट्रपति पेजेशकियन की बातों से मिले संकेत

तेहरान, एजेंसी। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने अमेरिका और इस्राइल के साथ जारी युद्ध को समाप्त करने के लिए तीन अहम शर्तें रखीं हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि केवल तभी संघर्ष खत्म हो सकता है जब ईरान के वैध अधिकारों को मान्यता दी जाए, युद्ध में हुए नुकसान का मुआवजा दिया जाए और भविष्य में किसी भी हमले के खिलाफ ठोस अंतरराष्ट्रीय गारंटी दी जाए। पेजेशकियन ने यह बयान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर

दिया। उन्होंने लिखा, ष्रूस और पाकिस्तान के नेताओं से बातचीत में मैंने क्षेत्र में शांति बनाए रखने के लिए ईरान की प्रतिबद्धता दोबारा पक्की की। यह युद्ध, जो यहूदी शासन (इस्राइल) और अमेरिका की वजह से शुरू हुआ, केवल तब रोका जा सकता है जब ईरान के कानूनी अधिकारों को मान्यता मिले, हर्जाना दिया जाए और भविष्य में हमले से बचाव के लिए अंतरराष्ट्रीय गारंटी हो। ईरान की यह कूटनीतिक पहल ऐसे समय में सामने आई है जब युद्ध अपने दूसरे हफ्ते में प्रवेश कर चुका है और फिलहाल तनाव कम होने के कोई संकेत नहीं दिख रहे हैं। तेहरान ने स्पष्ट किया है कि वह क्षेत्र में शांति चाहता है, लेकिन इसके लिए जिम्मेदार देशों को जवाबदेह ठहराना आवश्यक है। गौरतलब है कि यह संघर्ष 28 फरवरी को उस समय शुरू हुआ जब अमेरिका और इस्राइल ने ईरान के खिलाफ संयुक्त हमला किया। इसके जवाब में ईरान ने भी इस्राइल के कई शहरों पर ड्रोन और मिसाइल हमले किए, साथ ही जॉर्डन, इराक और खाड़ी के देशों में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को भी निशाना बनाया। इन घटनाओं के बाद पूरे मध्य पूर्व में तनाव तेजी से बढ़ गया और हालात और गंभीर होते जा रहे हैं।

ईरान पर सैन्य कार्रवाई सही? घर में घिरे ट्रंप, सर्वे में अमेरिका के लोगों का चौंकाने वाला खुलासा

वॉशिंगटन, एजेंसी। ईरान के खिलाफ अमेरिकी सैन्य कार्रवाई को लेकर अमेरिका में जनता की राय बंटी हुई है। नए सर्वे बताते हैं कि अधिकांश अमेरिकी इस कदम के पक्ष में नहीं हैं और उन्हें डर है कि इससे देश पहले से अधिक असुरक्षित हो सकता है। राजनीतिक ध्रुवीकरण भी साफ दिख रहा है जहां रिपब्लिकन मतदाता राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के फैसले के साथ खड़े हैं, वहीं डेमोक्रेट और स्वतंत्र मतदाता चिंता और विरोध में हैं। क्विनिपियाक यूनिवर्सिटी के सर्वे में लगभग 53: रजिस्टर्ड वोटर्स ने ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई का विरोध किया, जबकि 40: ने समर्थन किया और 10: ने स्पष्ट राय नहीं दी। इप्सोस, वाशिंगटन पोस्ट और ब्छछ के सर्वे में भी यही रुझान दिखा कि अधिकांश अमेरिकी इस कदम के पक्ष में नहीं हैं। इसके विपरीत, फॉक्स न्यूज के सर्वे में मत लगभग बराबर बंटा हुआ दिखा, जहां आधे मतदाताओं ने समर्थन किया और आधे ने विरोध। क्विनिपियाक के सर्वे में 55: लोगों ने कहा कि उन्हें नहीं लगता कि ईरान ने अमेरिका के लिए तत्काल कोई सैन्य खतरा पैदा किया। वहीं, फॉक्स न्यूज के सर्वे में 60: मतदाताओं ने माना कि ईरान अमेरिका के लिए वास्तविक खतरा है।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।